''झांसी जनपद में संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजनांतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के प्रभाव का सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्रस्तुत प्रतिवेदन''

सर्वेक्षक संस्था

समाज कार्य विभाग,
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी

सर्वेक्षक

डॉ0 यतीन्द्र मिश्र
विभागाध्यक्ष समाज कार्य विभाग एवं मुख्य सर्वेक्षक (परियोजना)

एवं

गठित टीम (सर्वेक्षक एवं शोध छात्र)

डॉ0 बी.आर. अम्बेडकर, समाज विज्ञान संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी

(सन् 2024)

ग्राम पंचायत गुवावली, विकास खण्ड बबीना, जनपद झाँसी

प्रापक–

राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन,

नमामि गंगे तथा ग्रामीण जलापूर्ति विभाग,

किसान बाजार, विभूति खंड, गोमती नगर, लखनऊ।

प्रेषक–

विभागाध्यक्ष,

समाज कार्य विभाग,

बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झांसी।

विषय– *''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' कार्यक्रम से बुंदेलखंड क्षेत्र के अंतर्गत सात जनपदों के प्रत्येक जनपद में चयनित 10 ग्रामों के ग्रामवार प्रभाव आकलन का प्रतिवेदन।*

विषय परिचय– जल जीवन मिशन माननीय प्रधानमंत्री भारत सरकार की महत्वाकांक्षी परियोजना है। यह परियोजना अगस्त 2019 में सर्वप्रथम गोवा से लागू की गई। इस योजना का मुख्य उद्देश्य 2019 से 2024 तक हर ग्रामीण घर में नल का पानी उपलब्ध कराने की है। इस योजना द्वारा भारत के प्रत्येक ग्रामीण घर में स्वच्छ जल की पहुंच सुनिश्चित करना है। इस योजना के अंतर्गत प्रत्येक ग्रामीण परिवार तक स्वच्छ जल हेतु नल का कनेक्शन दिया जाना तथा उस

नल से प्रत्येक परिवार तक लगभग 55 लीटर प्रतिदिन पानी की पहुंच सुनिश्चित किया जाना है जिससे आम ग्रामीण जन का जीवन स्तर निःरोग एवं सुखद हो सके

साहित्य आकलन एवं अवलोकन– इतिहास गवाह रहा है कि किसी देश में उत्पादक नागरिक के निर्माण में संतुलित आहार एवं स्वच्छ जल की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। संपूर्ण स्वास्थ्य की प्राप्ति हेतु जिसमें मानसिक, शारीरिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य सीधे जल से जुड़ा हुआ मुद्दा है। यदि साफ एवं स्वच्छ जल की आपूर्ति आम ग्रामीण जन तक जिनकी आबादी बहुसंख्यक है, पहुंच जाए तो निश्चित ही उनके जीवन स्तर में बदलाव सुनिश्चित किया जा सकता है। बुंदेलखण्ड परिक्षेत्र में जल की समस्या प्राचीन है, क्योंकि परिक्षेत्र पहाड़ी एवं पठारी है। इसलिए आम जन तक पानी की पहुंच बहुत ही मुश्किल रहा है। ग्रामीण जन के खेती–बाड़ी एवं स्वच्छ पेयजल की अपर्याप्तता उनके जीवन को अस्वास्थ्यकर एवं मुश्किल बनाया है।

प्रभाव आकलन का उद्देश्य–

1. जल जीवन मिशन के अंतर्गत झांसी जनपद के विकास खण्ड बबीना में अवस्थित ग्राम सभा गुवावली में ''हर घर नल–हर घर जल'' कार्यक्रम के प्रभाव का आकलन।
2. योजना क्रियान्वयन द्वारा ग्राम सभा गुवावली में निवासित ग्रामीण जन के सामाजिक–आर्थिक, शैक्षिक तथा स्वास्थ्य एवं सामाजिक व्यवहार में बदलाव की स्थिति का अध्ययन।

प्रभाव आकलन की उपकल्पना–

1. राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन द्वारा संचालित परियोजना ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ग्राम सभा गुवावली, विकास खण्ड बबीना, जनपद झांसी में कृत कार्य ''हर घर नल–हर घर जल'' से लोगों के जीवन स्तर में बदलाव आया है
2. स्वास्थ्य के स्तर में सुधार हुआ है।
3. परियोजना के संचालन से ग्रामीण जन के सामाजिक–आर्थिक एवं शैक्षिक स्थितियों में बदलाव हुआ है।
4. परियोजना के संचालन से सामाजिक मनोवृत्ति एवं सामाजिक व्यवहार में बदलाव आया है।

अध्ययन की प्रणाली एवं उपकरण–

अध्ययन के प्रयोग हेतु शोध की निम्न तकनीकि एवं उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

1. अवलोकन
2. सहभागी मूल्यांकन

परियोजना ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' कार्यक्रम के अंतर्गत प्रथम ग्राम गुवावली का अध्ययन किया गया। इसके अंतर्गत सर्वप्रथम गांव की जनसंख्या, गांव में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, परिवारों को प्राप्त जल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक

स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान

अशोक पुरी से गांव की समग्रता के संदर्भ में बात की गयी। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों (10) से बात करके गांव की मूलभूत समस्याओं के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके अतिरिक्त ग्राम के विद्यालयों, एक कम्पोजिट विद्यालय एवं ग्राम सभा के दो प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, मूलभूत सुविधाओं, जल संयोजन की जानकारी प्राप्त की गई। कम्पोजिट विद्यालय में छात्र/छात्राओं का नामांकन–100 और दोनों प्राथमिक विद्यालयों में छात्र/छात्राओं का नामांकन क्रमशः 38 एवं 54 पाया गया तथा जल संयोजन एवं शुद्ध पेयजल की प्राप्ति समुचित मात्रा में पायी गई। गुवावली ग्राम में स्वच्छ जल प्राप्ति हेतु गृह नल संयोजन की संख्या–380 है। इस प्रकार हर परिवार को शुद्ध पेयजल की प्राप्ति हेतु ''हर घर नल–हर घर जल'' की संतृप्तता पायी गयी तथा हर परिवार को पर्याप्त मात्रा में शुद्ध जल प्राप्त हो रहा है। ग्राम गुवावली की कुल जनसंख्या लगभग 2073 है।

निदर्श निर्धारण : झांसी जनपद के विकास खंड बबीना में अवस्थित ग्राम सभा गुवावली की जनसंख्या लगभग 2073 है जिसमें बहुसंख्यक आबादी 74 प्रतिशत अन्य पिछड़ा वर्ग की एवं 24 प्रतिशत अनुसूचित जाति एवं जनजाति तथा 2 प्रतिशत सामान्य जाति के लोग निवासित हैं। शोध में स्तरीकृत दैव निदर्शन का प्रयोग करते हुए प्रत्येक प्रस्तर से 10 प्रतिशत लोगों का चुनाव अध्ययन के लिए किया गया है। इस प्रकार संपूर्ण जनसंख्या के अलग–अलग जाति के अनुपात का 1/10 अध्ययन का आधार बनाया गया। इस प्रकार 2073/10 = 207 लोगों, जिसमें स्त्री, पुरुष तथा बच्चे, जो 18 वर्ष से ऊपर के थे, उनसे बात करके तथा उनके जीवन स्तर पर योजना का प्रभाव देखा गया। इसके अतिरिक्त ग्राम गुवावली के हितधारकों जिसमें ग्राम प्रधान अशोक पुरी एवं ग्राम पंचायत के 10 सदस्यों से योजना के संदर्भ में बात की गई। ग्राम सभा गुवावली के एक कंपोजिट विद्यालय जिसकी प्रधानाध्यापिका श्रीमती पुष्पलता से एवं विद्यालय में छात्रों के नामांकन–100 छात्रों से ''हर घर नल हर घर जल'' योजना के संदर्भ में बात की गई। कम्पोजिट विद्यालय के अतिरिक्त ग्राम सभा गुवावली में दो और प्राथमिक विद्यालय हैं जिसमें छात्रों का नामांकन क्रमशः 38 एवं 54 है। इन विद्यालयों के प्रधानाध्यापिका हृदय ज्योति एवं उषा सिंह को भी न्यादर्श में सम्मिलित किया गया। ग्राम सभा गुवावली में कोई आंगनवाड़ी कार्यकत्री नहीं है और ना ही कोई प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र एवं कर्मी पाया गया।

समाविष्ट के मानदंड : ग्राम सभा गुवावली, विकास खंड बबीना, जनपद झांसी में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम सभा के संपूर्ण जनसंख्या का 1/10 और हितधारकों को अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें वयस्क स्त्री, पुरुष तथा वृद्ध सम्मिलित थे।

बहिष्कार के मानदंड : किसी भी ऐसे व्यक्ति को जो ग्राम सभा गुवावली से संबद्ध नहीं था या जो वर्णित योजना का पात्र या लाभार्थी नहीं था, उसे अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया गया है।

परिणाम एवं चर्चा

सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में : न्यादर्श में चयनित 207 में से 105 महिलाओं से चर्चा करने

एवं पूछने पर की योजना लागू होने के पूर्व की स्थितियों एवं पश्चात् की स्थितियों में क्या बदलाव आप महसूस कर रही हैं। 95 प्रतिशत महिलाओं का जवाब था कि इस परियोजना के लागू होने से समय की बचत होती है। घर–परिवार को पर्याप्त समय दे रही हैं। स्वच्छ पेयजल की प्राप्ति से स्वास्थ्य बेहतर हुआ है। परिवार के दूसरे कार्यों को करने में उनकी भूमिका एवं महत्त्व बढ़ा है। उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ है। बच्चों को पढ़ने–लिखने तथा परिवार की समुचित देखभाल हेतु गुणात्मक समय मिला है, जो पहले नहीं मिलता था। इस प्रकार अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन से यह पाया गया कि बहुसंख्यक आबादी के जीवनचर्या में सामाजिक

परिवर्तन इस योजना के लागू होने से हुआ है। समय की बचत हुई है, धन की बचत हुई है और इन सब का प्रभाव ग्रामीण जीवन को खुशहाल बनाया है

शिक्षा की स्थिति में बदलाव : ग्राम सभा गुवावली के संपूर्ण निदर्श 207 से चर्चा एवं अवलोकन

तथा सहभागी मूल्यांकन में यह पाया गया कि एक कम्पोजिट विद्यालय तथा दो प्राथमिक विद्यालय के शैक्षिक परिवेश में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। छात्र–छात्राओं हेतु विद्यालय में पर्याप्त शुद्ध जल की उपलब्धता पाई गई। छात्रों के नामांकन दर में भी पूर्व की अपेक्षा वृद्धि दर्ज की गई। छात्राओं के नामांकन दर में भी पूर्व की अपेक्षा वृद्धि हुई है। विद्यालय में शुद्ध पेयजल की उपलब्धता छात्र–छात्राओं के स्वास्थ्य में अभिवृद्धि किया है। ग्रामीण महिलाओं को स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता से समय की बचत से अब वह अपने बच्चों को समय से स्कूल भेजने और अधिक से अधिक समय स्कूल में रहकर पढ़ने हेतु प्रेरित किया है। योजना के लागू होने के पश्चात 90 प्रतिशत अभिभावकों ने यह स्वीकार किया कि समय की बचत से हम लोग अब पर्याप्त समय बच्चों की शिक्षा पर दे रहे हैं। बच्चों के स्कूल भेजने से लेकर उन्हें स्कूल में

अच्छी शिक्षा मिल रही है। इस पर उनका ध्यान रहता है जिससे बच्चे स्कूल में रहकर अच्छी पढ़ाई–लिखाई कर रहे हैं।

स्वास्थ्य संबंधी बदलाव : संपूर्ण न्यादर्श 207 और हितधारकों से चर्चा करने एवं अवलोकन करने

तथा सहभागी मूल्यांकन से प्राप्त तथ्यों से ज्ञात हुआ कि 100 प्रतिशत लोगों ने यह माना कि इस योजना के लागू होने से उनके स्वास्थ्य संबंधी स्थितियों में बदलाव आया है। पेट से संबंधित बीमारियों में कमी आई है। पीलिया से संबंधित रोगों में कमी हुई है। भोजन ठीक से पचता है। स्वास्थ्य संबंधी खर्च में कमी आई है, जिससे यह पैसा अब हम लोग अपने बच्चों की पढ़ाई–लिखाई एवं खेती–बाड़ी के कार्यों में लगाकर लाभ कमा रहे हैं। शारीरिक बीमारियों से मुक्ति के साथ ही मानसिक संतुष्टि का भाव भी लोगों में देखने को मिला है। जल की उपलब्धता एवं अस्वच्छ

जल से अब उन्हें निजात मिल गया है और अब वे शारीरिक बीमारियों एवं मानसिक कष्ट एवं उत्पीड़न से बच गए हैं।

सामाजिक व्यवहार में बदलाव : 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह माना कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से पूरा गांव संतृप्त है। पहले स्वच्छ जल तक पहुंच केवल अमीर लोगों तक ही था। गरीब एवं वंचित वर्ग के लोग तालाबों एवं कुओं के पानी से ही अपनी दिनचर्या का काम करते थे, लेकिन अब हर परिवार तक स्वच्छ जल की पहुंच ने उनके सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन किया है। लोगों की सोचने समझने के ढंग में परिवर्तन आया है। सामाजिक गतिशीलता बढ़ी है। सामाजिक अंतः–क्रिया में बदलाव आया है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि इस योजना के लागू होने के पश्चात गुवावली ग्राम के लोगों के समग्र दृष्टिकोण में बदलाव दृष्टिगोचर हो रहा है।

बहुसंख्यक आबादी न्यादर्श की 85 प्रतिशत लोगों ने पानी की उपलब्धता से शादी विवाह से संबंधित बदलाव के बारे में अनभिज्ञता प्रकट की जबकि 15 प्रतिशत लोगों ने स्वीकार किया कि बदलाव हुआ है। जैसे– पानी की उपलब्धता ने सांस्थानिक मूल्य में बदलाव किया है, जैसे– परिवार की सोच बदली है। रहन–सहन का स्तर बदला है, तो यह शादी विवाह की स्थितियों में भी बदलाव किया है

रोजगार के अवसर : न्यादर्श के बहुसंख्यक लोग 100 प्रतिशत में यह माना कि ग्राम गुवावली में रोजगार का साधन कृषि एवं पशुपालन ही है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से सभी परिवारों तक शुद्ध पेयजल की पहुंच ने आम लोगों के समय की बचत की है। साथ ही लोगों को आम बीमारियों से बचाव कर स्वस्थ जीवन जीने का मौका दिया है। ऐसे में समय और पैसे

दोनों की बचत ने उन्हें रोजगार के नए अवसर दिए हैं। खेती–किसानी का काम अब वे और अच्छे से कर पा रहे हैं। छोटे–छोटे व्यवसाय के प्रति उन्मुख हो रहे हैं। ग्रामीण महिला एसएच0जी0 का गठन कर व्यवसाय के प्रति उन्मुख हो रहे हैं। कुछ ग्रामीण युवा सरकारी नौकरियों की वजह से बाहर गए हैं। शेष गांव में ही रहकर खेती–बाड़ी का कार्य एवं व्यवसाय कर रहे हैं। युवाओं के आत्म–विश्वास के स्तर में वृद्धि हुई है। वह स्वस्थ तथा कुशल कामगार के रूप में कृषि, पशुपालन तथा गांव के बाहर अगल–बगल के बाजारों में प्राइवेट नौकरी एवं छोटे व्यवसाय कर रहे हैं।

इस प्रकार निर्धारित लक्ष्य का सर्वे एवं अध्ययन करने से यह तथ्य प्राप्त होता है कि राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन द्वारा संचालित परियोजना ''जल जीवन मिशन'' का उद्देश्य ''हर घर नल–हर घर जल'' जिस उद्देश्य को लेकर कार्य कर रही है, वह उद्देश्य ग्राम गुवावली, विकास खंड बबीना, जनपद झांसी का टीम सर्वेक्षण एवं अध्ययन के पश्चात प्राप्त आंकड़े यह सुनिश्चित करते हैं कि सरकार द्वारा संचालित एवं पोषित परियोजना अपने लक्ष्य के अनुरूप कार्य किया है एवं ग्राम गुवावली की जनता इस परियोजना के अंतर्गत कृत कार्य ''हर घर नल–हर घर जल'' से पूर्णतया संतुष्ट है एवं अपने जीवन के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक तथा स्वास्थ्य के पक्ष पर बदलाव महसूस कर रही है।

ग्राम बैजपुर, विकास खण्ड बबीना, जनपद झांसी

परियोजना ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' कार्यक्रम के अंतर्गत द्वितीय ग्राम बैजपुर का अध्ययन किया गया। इसके अंतर्गत सर्वप्रथम गांव की जनसंख्या, गांव में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, परिवारों को प्राप्त जल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान रेखा

राय से गांव की समग्रता के संदर्भ में बात की गयी। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों (07) से बात करके गांव की मूलभूत समस्याओं के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके अतिरिक्त ग्राम के विद्यालयों, एक प्राथमिक विद्यालय एवं एक पूर्व माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, मूलभूत

सुविधाओं, जल संयोजन की जानकारी प्राप्त की गई। दोनों विद्यालयों में छात्र/छात्राओं का नामांकन क्रमशः 51 एवं 63 पाया गया तथा जल संयोजन एवं शुद्ध पेयजल की प्राप्ति समुचित मात्रा में पायी गई। गांव में कार्यरत आंगनबाड़ी कार्यकत्री श्रीमती सुशील देवी एवं सहायक द्रौपदी नायल से बात कर बच्चों तथा शिशुओं एवं माताओं के पोषाहार तथा टीकाकरण आदि की जानकारी प्राप्त की गयी। ग्राम बैजपुर में कार्यरत एक पी0एच0सी0 सेन्टर पर कार्य करने वाली स्वास्थ्य कार्यकत्री श्रीमती संतोषी श्रीवास्तव ए0एन0एम0 से बात कर स्वास्थ्य सुविधाओं की जानकारी प्राप्त की गयी तथा स्वास्थ्य सुविधाओं को उचित पाया गया। बैजपुर ग्राम में स्वच्छ जल प्राप्ति हेतु गृह नल संयोजन की संख्या–194 है। इस प्रकार हर परिवार को शुद्ध पेयजल की प्राप्ति हेतु ''हर घर नल–हर घर जल'' की संतृप्तता पायी गयी तथा हर परिवार को पर्याप्त मात्रा में शुद्ध जल प्राप्त हो रहा है। ग्राम बैजपुर की कुल जनसंख्या–1200 है।

अध्ययन का उद्‌देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।

निदर्श निर्धारण : बैजपुर की कुल जनसंख्या–1200 है, जिसमें सामान्य जाति के 15 प्रतिशत, अन्य पिछड़ा वर्ग 70 प्रतिशत, अनुसूचित जाति 10 प्रतिशत और अनुसूचित जनजाति के 05 प्रतिशत लोग हैं। निदर्श निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। ग्राम बैजपुर की कुल जनसंख्या के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है (1200/10 = 120)। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में कुल 120 लोगों (महिला और पुरूष) को, जो कि बैजपुर ग्राम के निवासी हैं, सम्मिलित करके योजना के

प्रभाव को जाना गया। साथ ही योजना के प्रभाव के संदर्भ में ग्राम बैजपुर के हितधारकों से भी चर्चा की गयी।

समाविष्ट के मानदण्ड : ग्राम सभा बैजपुर विकास खण्ड बबीना, जनपद झांसी में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम सभा की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 वें भाग के साथ ही ग्राम सभा के हितधारकों को अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें वयस्क स्त्री, पुरूष और वृद्ध सम्मिलित हैं।

बहिष्करण के मानदण्ड : प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसे व्यक्ति को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो ग्राम बैजपुर से सम्बद्ध और वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था।

परिणाम एवं चर्चा :

सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में : अध्ययन में न्यादर्श रूप में सम्मिलित कुल 60 महिलाओं से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के पूर्व और पश्चात् की स्थितियों के संदर्भ में चर्चा करने पर पता चला कि महिलाओं की प्रस्थिति में गुणात्मक सुधार आया है। परिवार में उनकी भूमिका बढ़ी है। 98 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया कि पहले शुद्ध और पर्याप्त जल के अभाव के कारण बीमारियां अधिक होती थी, जो कि अब प्रत्येक घर में नल का कनेक्शन होने और शुद्ध पेयजल की आपूर्ति के कारण बहुत कम हो गई है। बहुसंख्यक महिलाओं से सहभागी मूल्यांकन के आधार पर पता चला कि पहले खुले में शौच जाने के कारण सांप–बिच्छू या जहरीले कीड़े के काटने और आसाजिक तत्त्वों से सुरक्षा का डर होता था, जो कि अब नियमित जलापूर्ति होने से घर में शौचालय बनवा लेने से खुले में शौच से मुक्ति मिल गई है

और खुले में शौच से होने वाली बीमारियां भी कम हुई हैं। ग्राम बैजपुर में संचालित स्वयं

सहायता समूह की सदस्यों से चर्चा करने पर पता चला कि अब महिलाओं को जल संचय में लगने वाले समय से छुटकारा मिल गया है, जिसका उपयोग वह बच्चों की शिक्षा, पालन–पोषण, परिवार की देख–भाल और कृषि और पशुपालन तथा पारिवारिक व्यवसाय में कर रही हैं। कुल मिलाकर ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने महिलाओं के जीवन–शैली और सामाजिक प्रस्थिति में परिवर्तन करते हुये बृहद स्तर पर सकारात्मक बदलाव पर बल दिया है।

शिक्षा की स्थिति में बदलाव : गांव के लोगों से चर्चा पर पता चला कि योजना के संचालन से ग्राम बैजपुर में शिक्षा में सुधार आया है। महिलायें बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दे रही हैं क्योंकि समय और धन के बचत के साथ ही स्वास्थ्य स्तर में सुधार आया है, जिससे उनकी

शारीरिक और मानसिक स्थिति सुदृढ़ हुयी है और बच्चे अधिक मनोयोग से पढ़ाई–लिखाई पर

ध्यान दे रहे हैं। प्राथमिक और पूर्व माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य और नामांकित छात्र/छात्राओं से चर्चा पर पता चला कि पूर्व की अपेक्षा विद्यालय में नामांकन दर में वृद्धि हुयी हैं। विद्यालय में शुद्ध पेयजल की उपलब्धता से अभिभावक नियमित रूप से बच्चों को पढ़ने के लिए भेज रहे हैं। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक प्रदीप पाठक ने बताया कि *''बच्चों के मानसिक स्तर में शुद्ध पेयजल की सुनिश्चितता से सुधार आया है, जिससे वह पढ़ाई गयी चीजों को कम समय में याद कर पा रहे हैं''।* उक्त विद्यालयों में एक नवीन बदलाव देखा गया जो कि बालिकाओं की संख्या में वृद्धि थी, क्योंकि योजना संचालित होने के पूर्व विद्यालय में बने

शौचालयों में जलापूर्ति की पर्याप्त व्यवस्था नहीं थी, जो कि अब हो चुकी हैं, जिससे अभिभावक अपनी बेटियों को यहां पढ़ने के लिए भेज रहे हैं, क्योंकि बेटियों को अब खुले में शौच जाने की जरूरत नहीं है। अब बालिकाओं की शिक्षा में भी सुधार देखा जा रहा है। समग्र रूप में ग्राम बैजपुर में शिक्षा की स्थिति में सुधार हुआ है और लोगों में संतुष्टि की भावना दिख रही है।

स्वास्थ्य संबंधी बदलाव : हितधारकों और न्यादर्श में सम्मिलित 120 लोगों से उद्देश्पूर्ण चर्चा करने पर लोगों ने सर्वसम्मति से बताया कि सबसे बड़ा बदलाव स्वास्थ्य क्षेत्र में हुआ है। पेट संबंधी बीमारियां कम हुई हैं, बीमारियों कम होने से धन की बचत हुई है, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार हुआ है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने से पूर्व प्रत्येक दूसरा घर वर्षा ऋतु में पेट संबंधी बीमारियों से पीड़ित होता था, जो कि अब यदा–कदा ही देखने को मिल रहा है। स्वास्थ्य केन्द्र की कर्मचारी श्रीमती संतोषी श्रीवास्तव के अनुसार– *''जल–जनित बीमारियां बहुत कम हुई हैं जिससे लोगों के पैसे बच रहे हैं और गरीब लोगों को कर्ज के जाल से मुक्ति मिल गयी है''*। ग्राम बैजपुर में लोगों के स्वास्थ्य में सुधार आने से आत्मविश्वास और खुशहाली में वृद्धि आयी है। लोगों के कार्य प्रदर्शन में सुधार होने से उत्पादक गतिविधियां बढ़ी हैं।

सामाजिक व्यवहार मे बदलाव : ग्राम बैजपुर ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से पूर्ण रूप से आच्छादित है। पूर्व में केवल समृद्ध और उच्च जाति के लोगों तक ही शुद्ध पेयजल की पहुंच थी, जो कि योजना लागू होने के बाद से सभी परिवार शुद्ध पेयजल से आच्छादित हो गये हैं। जल संकट के कारण कई बार झगड़े भी जाते थे, जिस पर अब विराम लग गया है। गांव के लोगों में सहकार की भावना आयी है। सामाजिक भेद–भाव भी कम हुआ है। जल के लिए टैंकर

के पीछे लगने वाली लाइनों से निजात मिला है। सामाजिक अंत–क्रिया स्वस्थ हुई है। शादी–विवाह के अवसर पर बाहर से जल की व्यवस्था करने की जरूरत अब नहीं है। योजना से प्राप्त शुद्ध पेयजल से उत्सवों/समारोहों में खपत होने वाले जल की आपूर्ति हो जा रही है। अतः स्पष्ट है कि लोगों का रहन–सहन उन्नत हुआ है और जीवन–शैली में आधुनिकता देखी जा सकती है।

रोजगार के अवसर : ''हर घर नल–हर घर जल'' ने रोजगार को भी संबोधित किया है। ग्राम

बैजपुर में महिलाओं की समय बचत और स्वास्थ्य स्तर में सुधार होने से हस्त–शिल्प जैसे कार्यों को वृद्धि देखी गयी है। 95 प्रतिशत महिलाओं ने माना कि वह अब रोजगार उन्मुख कार्यों के साथ ही कृषि और पशुपालन पर अधिक समय दे पा रही हैं। पेयजल की आपूर्ति से ग्राम बैजपुर में पशुपालन से दुग्ध उत्पादन में बढ़ोत्तरी देखी गयी है। कुछ युवा और प्रौढ़ लोग बाहर शहरों में रहकर जीवकोपार्जन कर रहे हैं एवं कुछ लोग दूकान, ठेला लगाकर और सब्जी आदि बेचकर

तथा गांव के आसपास नौकरी करके जीवकोपार्जन कर रहे हैं। जलापूर्ति से लोग सब्जी उत्पादन की ओर उन्मुख हो रहे हैं। ''जल जीवन मिशन'' योजनांतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' द्वारा पलायन में भी कमी देखी गयी है क्योंकि लोगों के पास रोजगार के विकल्प बढ़ गये हैं। युवाओं में आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है। युवा लोग अब गांव में रहकर ही रोजगार को प्राथमिकता दे रहे हैं। ग्राम रोजगार सेवक द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार अब पलायन में कमी आने से मनरेगा की ओर लोग अधिक आकर्षित हो रहे हैं। कुल मिलाकर योजना बहु–आयामी रूप से लोगों में सकारात्मक बदलाव का प्रेरित की है।

इस प्रकार निर्धारित लक्ष्य का सर्वेक्षण एवं अध्ययन करने से यह तथ्य प्राप्त होता है कि शासन द्वारा संचालित महत्त्वाकांक्षी ''जल जीवन मिशन'' परियोजना के उद्देश्य ''हर घर नल–हर घर जल'' जिस उद्देश्य को लेकर कार्य कर रही है, उस उद्देश्य को झांसी जनपद के बबीना विकास खण्ड के ग्राम बैजपुर का टीम सर्वे एवं अध्ययन के पश्चात् प्राप्त आंकड़े सुनिश्चित करते हैं कि सरकार द्वारा संचालित एवं पोषित परियोजना अपने लक्ष्य के अनुरूप कार्य कर रही है एवं ग्राम बैजपुर की जनता इस परियोजना के अंतर्गत कृत कार्य से पूर्णतयः संतुष्ट हैं और खुशहालपूर्ण जीवन व्यतीत कर रही है तथा ग्राम की जनता अपना सर्वांगीण विकास महसूस कर रही है।

ग्राम पंचायत सिया, विकास खण्ड चिरगांव, जनपद झांसी

परियोजना ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' कार्यक्रम के अंतर्गत तृतीय ग्राम सिया का अध्ययन किया गया। इसके अंतर्गत सर्वप्रथम गांव की जनसंख्या, गांव में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, परिवारों को प्राप्त जल संयोजनों की संख्या,

शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान नीलम यादव से गांव की समग्रता के संदर्भ में बात की गई। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों (05) से बात करके गांव की मूलभूत समस्याओं के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके अतिरिक्त ग्राम में संचालित दो विद्यालयों, एक प्राथमिक विद्यालय एवं एक पूर्व माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों से बातचीत करके विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, मूलभूत सुविधाओं, जल संयोजन की जानकारी प्राप्त की गई। दोनों विद्यालयों में

छात्र/छात्राओं का नामांकन क्रमशः 55 एवं 125 पाया गया। ग्राम सिया में जल संयोजन एवं शुद्ध पेयजल की प्राप्ति समुचित मात्रा में पायी गई। गांव में कार्यरत आंगनबाड़ी कार्यकत्री श्रीमती राजकुमारी से बात कर बच्चों तथा शिशुओं एवं माताओं के पोषाहार तथा टीकाकरण आदि की जानकारी प्राप्त की गयी। ग्राम सिया में संचालित स्वास्थ्य केन्द्र की कर्मचारी श्रीमती सोनम यादव से बात कर स्वास्थ्य सुविधाओं की जानकारी प्राप्त की गयी तथा स्वास्थ्य सुविधाओं को उचित पाया गया। सिया ग्राम की कुल जनसंख्या 2613 और शुद्ध पेयजल प्राप्ति हेतु गृह नल संयोजन की संख्या 403 है, जिससे नियमित शुद्ध जलापूर्ति की जा रही है। इस प्रकार ग्राम सिया के सभी परिवार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आच्छादित हैं और पर्याप्त मात्रा में शुद्ध पेयजल प्राप्त कर रहे हैं।

अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।

निदर्श निर्धारण : अध्ययन में सम्मिलित ग्राम सिया, विकास खण्ड चिरगांव, जनपद झांसी की कुल आबादी 2613 है, जिसमें सामान्य जाति की जनसंख्या 1882 और अनुसूचित जाति की जनसंख्या 731 है। अध्ययन में निदर्शन के रूप में स्तरीकृत दैव निदर्शन का प्रयोग करके प्रत्येक प्रस्तर पर 10 प्रतिशत लोगों का चुनाव ग्राम सिया से किया गया है। इस प्रकार से सिया ग्राम की कुल जनसंख्या से अगल–अलग अनुपात में 1/10 भाग को अध्ययन का आधार बनाया गया है। 2613/10 = 261 लोगों, जिसमें सिया ग्राम की स्त्री, पुरूष तथा 18 वर्ष से ऊपर के युवाओं से वार्ता करके उनके जीवन स्तर पर ''जल जीवन मिशन'' परियोजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव को देखा गया। साथ ही अध्ययन में हितधारकों के रूप में सिया

ग्राम के प्रधान नीलम यादव, ग्राम पंचायत सदस्यों, प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्रीमती रागिनी अहिरवार (नामांकन–55), उत्तर प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री विवेक पाण्डेय (कार्यवाहक) (नामांकन–125) और आंगनवाड़ी कार्यकत्री श्रीमती राजकुमारी से भी ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना का सिया ग्राम पर पड़ने वाले प्रभाव के संदर्भ में वार्ता किया गया। प्राथमिक और उत्तर प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों से योजना के प्रभाव के संदर्भ में बात किया गया। सिया ग्राम में एक स्वास्थ्य केन्द्र अवस्थित है जिसमें कार्यरत श्रीमती सोनम यादव से भी योजना के प्रभाव के संदर्भ में बात किया गया।

समाविष्ट के मानदण्ड : झांसी जनपद के विकास खण्ड चिरगांव के अंतर्गत ग्राम सिया में शासन द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम सिया की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 भाग को सम्मिलित किया गया। इसके अतिरिक्त सिया ग्राम के हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें स्त्री, पुरूष और वृद्ध सम्मिलित थे।

बहिष्करण के मानदण्ड : प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसे व्यक्ति को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो ग्राम सिया, विकास खण्ड चिरगांव, जनपद झांसी से सम्बद्ध और वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था।

परिणाम एवं चर्चा :

सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में : प्रस्तुत अध्ययन में सहभागी मूल्यांकन के आधार पर न्यादर्श के रूप में चयनित कुल 261 न्यादर्शों में से अध्ययन में सम्मिलित 135 महिलाओं से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के पश्चात् आने वाले परिवर्तन के संदर्भ में चर्चा करने

पर पता चला कि सभी (100 प्रतिशत) महिलाओं ने स्वीकार किया कि पहले शुद्ध पेय जल संग्रह करने में बहुत समय बर्बाद होता था, जो कि अब योजनांतर्गत नियमित शुद्ध जल की आपूर्ति

होने से समय की बचत हो रही है। ग्राम सिया की महिलाओं में योजना के प्रति अत्यधिक संतुष्टि का भाव देखा गया। अनेक महिलाओं ने कहा कि सरकार महिलाओं की समस्याओं के प्रति चिंतित है, इसलिए उसके समाधान हेतु योजनाओं को क्रियान्वित कर रही है। 91 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि पहले दूषित जल पीने से पेट दर्द की समस्या बहुत होती थी, जो कि शुद्ध पेयजल की निर्बाध आपूर्ति से लगभग समाप्त हो गयी है। समय बचत होने से महिलायें अब कृषि कार्य में अधिक समय दे रही हैं। महिलायें बच्चों की पढ़ाई–लिखाई पर ध्यान दे रही हैं। 95 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि वर्षों पुरानी समस्या का समाधान हुआ है। योजना के सफलतापूर्वक क्रियान्वयन से महिलाओं के आत्म–विश्वास में वृद्धि हुयी है। श्रम और धन की बचत का उपयोग उत्पादनात्मक और विकासात्मक कार्यों में किया जा रहा है। महिलायें सशक्त हो रही हैं और ग्राम सुख व समृद्धि की और अग्रसर है।

शिक्षा की स्थिति में बदलाव : ग्राम सिया, विकास खण्ड चिरगांव में एक प्राथमिक और एक उत्तर प्राथमिक विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है। प्राथमिक और उत्तर प्राथमिक विद्यालय में क्रमशः 55 और 125 छात्रों का नामांकन है। कुछ बच्चे गांव से बाहर स्थित निजी विद्यालयों में भी पढ़ने जाते हैं। उक्त महत्त्वाकांक्षी योजना द्वारा सिया ग्राम की शिक्षा में व्यापक स्तर सुधार आया है। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यपक श्रीमती रागिनी अहिरवार से योजना के प्रभाव के संदर्भ में चर्चा करने पर पता चला कि योजना के क्रियान्वयन के पहले विद्यालय में नामांकन और नियमित व पूरे समय तक बच्चों की उपस्थिति नहीं होती थी, क्योंकि विद्यालय में शुद्ध पेय जल और शौचालय जैसी मूलभूत सुविधाओं का अभाव था, जिससे अभिभावक निजी विद्यालयों में अपने बच्चों को पढ़ने हेतु भेजना पसंद करते थे। अध्ययनकर्ता द्वारा बालिकाओं की शिक्षा पर योजना के प्रभाव संबंधी सवाल पर पता चला कि बालकों की अपेक्षा बालिकाओं का नामांकन और उपस्थिति अधिक बढ़ी है, क्योंकि अभिभावक बालिकाओं को घर से दूर पढ़ने के लिए भेजने में डरते हैं, चूंकि अब गांव में ही विद्यालय में सुविधायें बढ़ गयी हैं और पठन–पाठन का परिवेश भी सुधर चुका है। इसलिए अभिभावक यहां भेजना पसंद कर रहे हैं। परिणामस्वरूप सिया गांव के शैक्षिक स्तर में सुधार हुआ है। विद्यार्थियों के स्वास्थ्य स्तर में शुद्ध पेयजल की सुनिश्चितता से अभिवृद्धि हुई, जिससे उनकी शारीरिक और मानसिक स्थिति में सुधार आया है। न्यादर्श में सम्मिलित 93 प्रतिशत लोगों ने बताया कि बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होने से बच्चे घर में पढ़ने के साथ ही नियमित विद्यालय भी जा रहे हैं। इस प्रकार सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त तथ्य संकेत करते हैं कि ग्राम सिया में बेहतर शैक्षिक वातावरण से बच्चों के भविष्य को सुधारा और संवारा जा रहा है।

स्वास्थ्य संबंधी बदलाव : ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के बहु–आयामी प्रभाव के रूप में

सिया ग्राम के लोगों के स्वास्थ्य स्तर में भी उत्तरोत्तर सुधार परिलक्षित हो रहा है। गांव में स्थित स्वास्थ्य केन्द्र की कर्मचारी श्रीमती सोनम यादव ने बताया कि पहले अन्य मौसम की अपेक्षा वर्षाकाल में पेट संबंधी बीमारी बढ़ जाती थी लेकिन बहुत कमी आयी है। योजना के प्रभाव के संदंर्भ में एक स्थानीय चिकित्सक से हुई चर्चा में पता चला कि गांव का पानी पीने योग्य नहीं था, जिसके कारण बच्चे अधिक बीमार होते थे और उनका स्वस्थ विकास नहीं हो पाता था। अब नियमित स्वच्छ जलापर्ति होने से बच्चों के साथ ही गांव के सभी लोगों पर प्रत्यक्ष रूप से सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। न्यादर्श के रूप में सम्मिलित महिलायें, युवा, वृद्ध सभी ने इस बात से सहमति प्रकट की कि ''हर घर नल–हर घर जल'' मिशन का गांव के चहुँमुखी विकास में विशिष्ट योगदान है। लोगों ने बताया कि डॉक्टर के पास खर्च करने वाला अनावश्यक धन अब बच रहा है, जिससे हम लोगों की गरीबी और कर्जदारी में कमी आयी है। अतः यह कहना समीचीन होगा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के प्रभावी संचालन के कारण सिया गांव एक अदृश्य दानव से सुरक्षित हो गया है।

सामाजिक व्यवहार मे बदलाव : सिया ग्राम पूर्ण रूप से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से

पूर्णतः आच्छादित है। पूर्व में शुद्ध पेयजल तक पहुंच केवल कुछ अमीर लोगों की थी, जो कि अब सभी लोगों तक हो चुकी है। गांव में जल संकट से उत्पन्न संघर्ष और भेद–भाव लगभग समाप्त हो गया है, जिससे सिया गांव के लोगों में सहकारिता व सहयोग को समर्थन मिला है। गांव में सह–अस्तित्त्व का विकास हुआ है। 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं के मतानुसार गांव में जल संकट को समाप्त होता देखकर बाहरी लोग अपनी बेटियों का विवाह सिया गांव में करने के अधिक इच्छुक हैं। सिया गांव के लोगों के रहन–सहन में वृद्धि हुई है। उनका जीवन स्तर उच्च हुआ है।

रोजगार के अवसर : योजना फलीभूत होने से जल संकट का पूर्ण समाधान हो गया है। शुद्ध जलापूर्ति से स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का विकास हुआ है। समय बचत और स्वास्थ्य स्तर में वृद्धि से लोग रोजगार पर अधिक ध्यान दे पा रहे हैं। सिया गांव में कृषि और पशुपालन को समर्थन मिला है, क्योंकि अब लोग इस पर अधिक ध्यान दे पा रहे हैं। सहभागी मूल्यांकन के

आधार पर प्राप्त तथ्यों के अनुसार पलायन में कमी योजना लागू होने के बाद देखी गयी है। 99 प्रतिशत लोगों ने बताया कि बीमारी पर व्यय न्यून होने से कर्ज जैसी समस्या का समाधान हुआ है। सिया गांव के कुछ लोग शहरों में रोजगार के सिलसिले में गये हैं और कुछ लोग गांव व आसपास ही रोजगार कर रहे हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने युवाओं में सकारात्मक दृष्टिकोण को जन्म दिया है।

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना जिस ध्येय को संबोधित होकर कार्य कर रही है, उसकी प्राप्ति, प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त आंकड़े सुनिश्चित करते हैं। सरकार द्वारा संचालित एवं पोषित परियोजना के अंतर्गत कृत कार्य सिया गांव की खुशहाली और समद्धि का उन्नत कर रही है। गांव की जनता की संतुष्टि योजना की महत्ता और प्रभाविता को सुस्पष्ट करती है। योजना सिया गांव के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और स्वास्थ्य जैसी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करके सकारात्मक परिवर्तन को समर्थित है। गांव के लोग एक बड़ा और महत्त्वपूर्ण बदलाव महसूस कर रहे हैं।

ग्राम सुल्तानपुरा, विकास खण्ड चिरगांव, जनपद झांसी

''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' कार्यक्रम के अंतर्गत चौथे ग्राम सुल्तानपुरा का अध्ययन सहभागी मूल्यांकन के आधार पर किया गया। इसके अंतर्गत

सर्वप्रथम गांव की जनसंख्या, गांव में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, परिवारों को प्राप्त जल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान रामकुमारी से गांव के संदर्भ में चर्चा की गयी। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों (05) से बात करके गांव में व्याप्त समस्याओं के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके अतिरिक्त ग्राम के कम्पोजिट विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, मूलभूत सुविधाओं, जल संयोजन की जानकारी प्राप्त की गई। विद्यालय में छात्र/छात्राओं का नामांकन 152 पाया गया तथा जल संयोजन एवं शुद्ध पेयजल की प्राप्ति समुचित मात्रा में पायी गई। गांव में कार्यरत आंगनबाड़ी

कार्यकत्री श्रीमती रेखा सविता से बात कर बच्चों तथा शिशुओं एवं माताओं के पोषाहार तथा टीकाकरण आदि की जानकारी प्राप्त की गयी। सुल्तानपुरा ग्राम में स्वच्छ जल प्राप्ति हेतु गृह नल संयोजन की संख्या–369 है। योजना से संतृप्त परिवारों को इस योजना में सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार हर परिवार को शुद्ध पेयजल की प्राप्ति हेतु ''हर घर नल–हर घर जल'' की संतृप्तता पायी गयी तथा हर परिवार को पर्याप्त मात्रा में शुद्ध जल प्राप्त हो रहा है। ग्राम सुल्तानपुरा की कुल जनसंख्या–1911 है।

अध्ययन का उद्‌देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।

निदर्श निर्धारण : सुल्तानपुरा की कुल जनसंख्या–1911 है, जिसमें सामान्य जाति के 1609 और अनुसूचित जाति के 302 लोग हैं। निदर्श निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। ग्राम सुल्तानपुरा की कुल जनसंख्या के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है (1911/10 = 191)। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में कुल 191 लोगों (महिला और पुरूष) को, जो कि सुल्तानपुरा ग्राम के निवासी हैं, को सम्मिलित करके योजना के प्रभाव को जाना गया, साथ ही योजना के प्रभाव के संदर्भ में ग्राम सुल्तानपुरा के हितधारकों से भी चर्चा की गयी।

समाविष्ट के मानदण्ड : ग्राम सभा सुल्तानपुरा विकास खण्ड चिरगांव, जनपद झांसी में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम सभा की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 वें भाग के साथ ही ग्राम सभा के हितधारकों को अध्ययन का आधार

बनाया गया, जिसमें वयस्क स्त्री, पुरूष और वृद्ध सम्मिलित हैं ताकि योजना के प्रभाव का तथ्यात्मक मूल्यांकन किया जा सके।

बहिष्करण के मानदण्ड : प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसे व्यक्ति को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो ग्राम सुल्तानपुरा से सम्बद्ध और वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था।

परिणाम एवं चर्चा :

सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में : ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए न्यादर्श रूप में सम्मिलित कुल 96 महिलाओं से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के पूर्व और पश्चात् की स्थितियों में आये बदलाव के संदर्भ में चर्चा करने

पर पता चला कि महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में गुणात्मक बदलाव आया है। महिलाओं की भूमिका परिवार में अपेक्षाकृत उच्च हो गयी है। सहभागी मूल्यांकन में सम्मिलित कुल 95 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि योजना से शुद्ध पेयजल की आपूर्ति से बीमारियों में कमी आयी है जिससे स्वास्थ्य स्तर में सुधार हुआ है। 100 प्रतिशत महिलाओं से कहा कि वह

स्वयं और उनके घर का कोई भी सदस्य खुले में शौच हेतु नहीं जाता है, जिससे बीमारियों में कमी आयी है। महिलाओं को जल संचय में लगने वाले समय और परिश्रम से मुक्ति मिल गयी है, जिसका उपयोग वह बच्चों की शिक्षा, पालन–पोषण, परिवार की देख–भाल और कृषि तथा पशुपालन तथा पारिवारिक व्यवसाय में कर रही हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने महिला सशक्तिकरण और स्वावलंबन की भावना को गतिशील बनाया है। अब परिवार में उनकी भूमिका को मान्यता मिल रही है। परिवार तथा गांव खुशहाल है।

शिक्षा की स्थिति में बदलाव : न्यादर्श के रूप में सम्मिलित ग्रामवासियों से उद्देश्यपूर्ण चर्चा करने पर पता चला कि योजना के क्रियान्वयन से ग्राम सुल्तानपुरा में शिक्षा के स्तर में सुधार आया है। महिलायें बचे हुये समय का उपयोग बच्चों की शिक्षा पर प्रयोग कर रही हैं। गांव में स्थित कम्पोजिट विद्यालय को योजना से संतृप्त किये जाने के पश्चात् नामांकन संख्या और बच्चों की नियमित उपस्थिति में वृद्धि हुई है। विद्यालय में शैक्षिक परिवेश में सुधार आया है। बच्चे पूर्ण मनोयोग से पढ़ाई–लिखाई पर ध्यान दे रहे हैं। विद्यालय के प्रधानाध्यापक जितेन्द्र चौबे ने बताया कि *''योजना लागू होने से बच्चों की सीखने के स्तर में सुधार हुआ है और अभिभावक शिक्षा के प्रति जागरूक भी हुये हैं''।* शिक्षा से वंचित बेटियों को योजना ने शिक्षा प्राप्त करने का बेहतर अवसर प्रदान किया है क्योंकि विद्यालय में पेयजल और शौचालय जैसी मूलभूत सुविधाओं को योजना से संबल प्राप्त हुआ है जिससे बंद पड़े शौचालय पूर्ण रूप से कार्यात्मक हो गये हैं। अतएव यह कहा जा सकता है कि ग्राम सुल्तानपुरा में शिक्षा के क्षेत्र में ''हर घर नल–हर घर जल'' ने सुधार किया है।

स्वास्थ्य संबंधी बदलाव : ग्राम सुल्तानपुरा के निवासियों में से न्यादर्श रूप में सम्मिलित कुल 191 उत्तरदाताओं से योजना के प्रभाव के संदर्भ में चर्चा करने पर लोगों ने बताया कि पेट संबंधी बीमारियों में बहुत कमी आयी है। बीमारियों के कम होने से धन और समय तथा श्रम की

बचत हुई है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करके लोगों की कार्यात्मक क्षमता में वृद्धि किया है। 97 प्रतिशत लोगों ने बताया कि वह बीमारी के कारण कर्ज में डूबे रहते थे लेकिन अब बीमारी का इलाज कराने के लिए कर्ज लेने की जरूरत नहीं है। महिलाओं के स्वास्थ्य स्तर में सुधार होने से उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ है और परिवार में उनकी भूमिका बढ़ी है। लोगों ने यह भी बताया कि योजना लागू होने के बाद से जन्म लेने बच्चे स्वस्थ पैदा हो रहे हैं अर्थात् जच्चा–बच्चा के स्वास्थ्य स्तर में भी सुधार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने किया है। कुल मिलाकर उक्त योजना ने व्यापक स्तर पर लोगों के स्वास्थ्य में सुधार लाकर उनकी शारीरिक और मानसिक स्थिति को उन्नत किया है जिससे गांव में योजना के प्रति उच्च स्तर की संतुष्टि देखी गई है।

सामाजिक व्यवहार मे बदलाव : ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना ने ग्राम सुल्तानपुरा को पूर्ण रूप से आच्छादित किया है। योजना लागू होने से पूर्व शुद्ध जल तक पहुंच केवल उच्च

जाति के लोगों तक थी, यह भेद–भाव अब समाप्त हो चुका है। बुंदेलखण्ड में प्राचीन काल से ही जल संकट प्रमुख समस्या रही है जिससे सुल्तानपुरा गांव भी अछूता नहीं था। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के बाद जल संकट की समस्या ग्राम सुल्तानपुरा में समाप्त हो गई है। लोगों के सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है। भेद–भाव की समाप्ति हुई है। समानता को प्रोत्साहन मिला है। सामाजिक उत्सवों में पेयजल के लिए परेशान होने की जरूरत अब नहीं रही। रहन–सहन और व्यवहार में समग्र परिवर्तन आने से शादी–विवाह में भी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। अतएव ''हर घर नल–हर घर जल'' ने आधुनिकता को प्रोत्साहित और मौलिक अधिकारों की प्राप्ति में योगदान दिया है और सतत विकास का पोषित किया है।

रोजगार के अवसर : '' जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' ने रोजगार को भी संबोधित किया है। वि0ख0 चिरगांव के ग्राम सुल्तानपुरा में रोजगार के विकल्पों में वृद्धि हुई है। जल संकट समाप्त होने से बचने वाले समय का उपयोग महिलायें सिलाई–कढ़ाई जैसे छोटे–मोटे कार्यों तथा कृषि और पशुपालन में एवं बच्चों की शिक्षा–दीक्षा में कर रही हैं। रोजगार में संलग्न होने से महिलाओं कुछ आमदनी भी हो रही है। गांव के कुछ युवा शहरों में रोजगार के सिलसिले में गये हुये हैं और कुछ गांव में ही रहकर स्वरोजगार कर रहे हैं। युवाओं में योजना के प्रति संतुष्टि है। रोजगार के अवसर उपलब्ध होने से पलायन की समस्या का समाधान करने में भी ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। सब्जी उत्पादन में महिलाओं और युवाओं की भागीदारी बढ़ी हैं। युवा लोग कुक्कुट पालन की ओर उन्मुख हुये हैं। युवाओं में आत्मविश्वास जाग्रत हुआ है और वह अपने गांव से जुड़कर रहना पसंद कर रहे हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने बहुआयामी परिवर्तन को प्रोत्साहित करके विकास को नवीन दिशा प्रदान किया है। ग्राम सुल्तानपुरा की जनता रोजगार के क्षेत्र में आये सकारात्मक परिवर्तन से खुशहाली का अनुभव कर रही है।

निष्कर्षतः शासन द्वारा संचालित महत्त्वाकांक्षी ''जल जीवन मिशन'' परियोजना के उद्देश्य ''हर घर नल–हर घर जल'' जिस उद्देश्य को लेकर कार्य कर रही है, उस उद्देश्य को झांसी जनपद के चिरगांव विकास खण्ड के ग्राम सुल्तानपुरा का सहभागी मूल्यांकन के पश्चात् प्राप्त तथ्य सुनिश्चित करते हैं कि सरकार द्वारा संचालित एवं पोषित परियोजना अपने लक्ष्य के अनुरूप कार्य कर रही है। वि0ख0 चिरगांव के ग्राम सुल्तानपुरा की आबादी ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के कारण गांव में आये बदलावों के प्रति सकारात्मक रूझान रखती है। योजना ने

बहुआयामी परिवर्तन को संबल प्रदान करके सतत विकास को प्रोत्साहित किया है और जनता की मौलिक जरूरतों को पूर्ण करने में सहयोग दिया है तथा जल संकट का पूर्ण निवारण करके शुद्ध पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित किया है।

ग्राम पंचायत पुरवा, विकास खण्ड मऊरानीपुर, जनपद झांसी

परियोजना ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' कार्यक्रम के अंतर्गत पांचवां ग्राम पुरवा का अध्ययन किया गया। इसके अंतर्गत सर्वप्रथम गांव की जनसंख्या, गांव में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, परिवारों को प्राप्त जल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान

बलराय अहिरवार से गांव की समग्रता के संदर्भ में बात की गयी। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों (02) से बात करके गांव की मूलभूत समस्याओं के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके अतिरिक्त ग्राम में संचालित प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों से बातचीत करके विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, मूलभूत सुविधाओं, जल संयोजन की जानकारी प्राप्त की गई। विद्यालय में छात्र/छात्राओं का कुल नामांकन 43 है। ग्राम पुरवा में जल संयोजन एवं शुद्ध पेयजल की प्राप्ति समुचित मात्रा में पायी गई। पुरवा ग्राम

की कुल जनसंख्या 982 और शुद्ध पेयजल प्राप्ति हेतु गृह नल संयोजन की संख्या 181 है, जिससे नियमित शुद्ध जलापूर्ति की जा रही है। इस प्रकार ग्राम पुरवा के सभी परिवार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आच्छादित हैं और पर्याप्त मात्रा में शुद्ध पेयजल प्राप्त कर रहे हैं।

अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।

निदर्श निर्धारण : झांसी जनपद के विकास खण्ड मऊरानीपुर के अंतर्गत ग्राम सभा पुरवा की जनसंख्या लगभग 982 है, जिसमें बहुसंख्यक आबादी 78 प्रतिशत सामान्य जाति की एवं शेष 22 प्रतिशत आबादी अनुसूचित जाति की है, जो कि पुरवा ग्राम सभा के स्थायी निवासी हैं। प्रस्तुत अध्ययन में स्तरीकृत दैव निदर्शन का प्रयोग करके प्रत्येक प्रस्तर से 10 प्रतिशत लोगों का चुनाव अध्ययन हेतु पुरवा ग्राम सभा के निवासियों से किया गया। इस प्रकार सम्पूर्ण जनसंख्या से अलग–अलग जाति के अनुपात में 1/10 भाग को अध्ययन का आधार बनाया गया। 982/10 = 98 लोगों को जिसमें स्त्री, पुरूष तथा बच्चे (जो 18 वर्ष से ऊपर के) थे, से बात करके तथा उनके जीवन स्तर पर जल जीवन मिशन के प्रभाव को देखा गया। साथ ही अध्ययन में पुरवा ग्राम के ग्राम प्रधान बलराम अहिरवार, पूर्व ग्राम प्रधान सुमन देवी और ग्राम पंचायत सदस्यों से योजना के संदर्भ में बात की गयी। पुरवा ग्राम में एक प्राथमिक विद्यालय संचालित है जिसके प्रधानाध्यापक उदित नारायण और विद्यालय में नामांकित कुल 43 विद्यार्थियों से भी योजना के संदर्भ में बात की गयी। पुरवा ग्राम सभा में आंगनबाड़ी केन्द्र और कोई–भी अस्पताल नहीं है

जिसके कारण न्यादर्श के रूप में इन्हें सम्मिलित नहीं किया जा सका। अध्ययन के समय सफाई कर्मी भी उपलब्ध नहीं था।

समाविष्ट के मानदण्ड : ग्राम सभा पुरवा विकास खण्ड मऊरानीपुर, जनपद झांसी में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम सभा की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 भाग साथ ही ग्राम सभा के हितधारकों को अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें स्त्री, पुरूष और वृद्ध सम्मिलित थे।

बहिष्करण के मानदण्ड : प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसे व्यक्ति को सम्मिलित नहीं किया गया है जो ग्राम सभा पुरवा से सम्बद्ध और वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था।

परिणाम एवं चर्चा :

सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में : अध्ययन में न्यादर्श के रूप में चयनित 98 लोगों में से 53 महिलाओं से योजना लागू होने के पूर्व एव ंपश्चात् आये बदलावों के सन्दर्भ में चर्चा करने पर

96 प्रतिशत महिलाओं बताया कि योजना लागू होने से उनके जीवन में गुणात्मक सुधार आया

है। समय की बचत हुयी है, स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता से स्वास्थ्य पूर्व की अपेक्ष बेहतर हुआ है। योजना लागू होने के पहले पेट संबंधी बीमारी अधिक होती थी, जिस पर अधिक पैसे खर्च करने पड़ते थे। अब बीमारी पर खर्च होने वाले पैसों की बचत हो रही है और स्वास्थ्य स्तर में सुधार होने से कार्यात्मक क्षमता भी बढ़ी है। पैसों की बचत होने के कारण बच्चों की शिक्षा में भी सुधार देखा गया। ग्राम सभा पुरवा में भूमिगत जल स्तर बहुत नीचे होने के कारण पानी की समस्या बनी रहती है, अब योजना लागू होने से जल संकट में बहुत कमी आयी है जिसके कारण पहले जो समय जल संचयन पर खर्च होता था, अब उसका उपयोग उत्पादक कार्यों और बच्चों को पढ़ाने–लिखाने तथा परिवार की समुचित देखभाल पर किया जाता है। इस प्रकार सहभागी मूल्यांकन के आधार पर यह पाया गया कि ग्राम सभा पुरवा की बहुसंख्यक आबादी की जीवन चर्या में सामाजिक परिवर्तन योजना लागू होने से आया है। बेहतर स्वास्थ्य स्तर, जल संकट की समाप्ति से श्रम और धन की बचत आदि के कारण ग्रामीण जीवन में खुशहाली आयी है।

शिक्षा की स्थिति में बदलाव : निदर्श के रूप में सम्मिलित पुरवा ग्राम सभा के लोगों से बात करने पर पता चला कि ग्राम सभा में अवस्थित प्राथमिक विद्यालय के शैक्षिक परिवेश में बहुत सुधार हुआ है। शुद्ध जल की अनुपलब्धता और जल संकट के कारण विद्यालय में बने इज्जत घर के कार्यात्मक ना होने के कारण विद्यालय में नामांकन दर बहुत कम थी। अध्ययन में सम्मिलित लोगों ने बताया कि विद्यालय में नामांकन दर तो बढ़ी ही है, साथ में बच्चे नियमित रूप से विद्यालय भी जा रहे हैं। बच्चों के स्वास्थ्य स्तर में सुधार देखा गया है। शुद्ध पेयजल संकट समाप्त होने से महिलाओं के पास बचने वाले समय का उपयोग बच्चों को समय से तैयार

करके नियमित विद्यालय भेजने में किया जा रहा है। बच्चों की संख्या बढ़ने से शिक्षक भी गंभीरता से पठन–पाठन का कार्य निष्पादित कर रहे हैं। अतः स्पष्ट है कि योजना लागू होने के

कारण विद्यालय में बच्चों के नामांकन दर में वृद्धि और विद्यालय में रूककर पढ़ाई करने, माता–पिता द्वारा ध्यान देने और शौचालय तथा साफ–सफाई की व्यवस्था के कारण प्राथमिक स्तर की शिक्षा में सुधार हुआ है।

स्वास्थ्य संबंधी बदलाव : अध्ययन में सम्मिलित न्यादर्श (98) और हितधारकों से सहभागी मूल्यांकन के आधार पर पता चला कि स्वास्थ्य में सुधार के प्रति लोगों में सर्वसम्मति है। बहुसंख्यक लोगों ने बताया कि पहले अपेक्षाकृत वर्षा ऋतु में पेट संबंधी बीमारी अधिक बढ़ जाती थी, जो कि जल जीवन मिशन योजना लागू होने के बाद से मिलने वाले शुद्ध जल के कारण पेट संबंधी बीमारियों की दर में बहुत कमी आयी है। 94 प्रतिशत अध्ययन में सम्मिलित लोगों ने बताया कि अब उन्हें बीमारी के लिए अनावश्यक रूप से डॉक्टर को पैसे देने की जरूरत नहीं पड़ती है जिसके कारण बचने वाले पैसे को वह बच्चों की पढ़ाई–लिखाई और कृषि कार्यों पर

खर्च करते हैं। शारीरिक स्वास्थ्य के साथ ही उनके मानसिक स्वास्थ्य में भी सकारात्मक बदलाव

देखा गया। जल जनित बीमारियों से निजात पाकर लोगों में संतुष्टि का भाव परिलक्षित हो रहा है।

सामाजिक व्यवहार मे बदलाव : उत्तरदाताओं और हितधारकों से बात करने पर यह स्पष्ट हुआ कि सम्पूर्ण पुरवा ग्राम सभा ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' से आच्छादित है। ग्राम सभा में जल संकट के कारण पहले केवल गांव के कुछ समृद्ध लोगों तक ही शुद्ध पेयजल की पहुँच थी और निर्धन और वंचित लोगों को प्राकृतिक जल स्त्रोंतों पर निर्भर रहना पड़ता था। महत्त्वाकांक्षी ''जल जीवन मिशन'' योजना लागू होने से सभी वर्गों तक शुद्ध पेयजल की पहुँच सुलभ हुयी है। लोगों के सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन आया है। अध्ययन में सम्मिलित लोगों ने बताया कि अनेक बार पानी को लेकर गांव में लड़ाई–झगड़े हो जाते थे, जो कि अब लगभग समाप्त हो गया है। पुरवा ग्राम सभा के लोगों में जल संकट प्रेरित लड़ाई–झगडे की कमी के कारण बेहतर अंतः–क्रिया के परिणाम स्वरूप सहकार की भावना विकसित हुयी है।

योजना लागू होने के बाद शुद्ध पेयजल की उपलब्धता का शादी–विवाह पर पड़ने वाले प्रभाव के संबध में बात करने पर न्यादर्श के रूप में सम्मिलित 79 प्रतिशत लोगों ने बताया कि कोई–भी प्रभाव नहीं पड़ा है जबकि 21 प्रतिशत लोगों ने बताया कि वधू पक्ष के लोगों की एक सकारात्मक छवि पुरवा ग्राम सभा के प्रति बनी है। योजना के फलीभूत होने के कारण लोगों के रहन–सहन का स्तर उच्च हुआ है और जल संकट जनित मानसिक समस्याएं लगभग समाप्त हो गयी हैं।

रोजगार के अवसर : ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' की परिकल्पना फलीभूत होने के कारण अनेक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत होने के साथ ही रोजगार जैसी समस्या का भी पुरवा ग्राम सभा में कुछ हद तक समाधान प्रस्तुत हुआ है। न्यादर्श (98) और हितधारकों से बात करने पर पता चला कि पुरवा ग्राम सभा कि बहुसंख्यक आबादी कृषि और पशुपालन जैसे रोजगार में संलग्न है। शुद्ध और नियमित पेयजल की उपलब्धता के कारण समय की बचत हुयी है और बीमारियो ंमें भी कमी आयी है, जिससे वह कृषि कार्य के साथ ही स्व–रोजगार भी अच्छे से कर पा रहे हैं। पलायन के संदर्भ में जल संकट अभी तक पुश फैक्टर के रूप में काम करता था, जो कि अब पुल फैक्टर के रूप में काम कर रहा है। सहभागी मूल्यांकन के आधार पर अध्ययन में सम्मिलित लोगों में से 98 प्रतिशत ने यह बताया कि पहले जल संकट के कारण मनुष्यों के लिए भी शुद्ध पेयजल उपलब्ध नहीं हो पाता था जबकि अब शुद्ध और पर्याप्त पेयजल उपलब्ध होने के कारण लोग पशुपालन की ओर अग्रसर हो रहे हैं जिससे उनकी आमदनी में बढ़ोत्तरी हुयी है। गांव के कुछ लोग रोजगार के कारण महानगरों में गये हैं जबकि कुछ लोग आस–पास के छोटे कस्बों और नगरों में नौकरी कर रहे हैं या अपना

काम धन्धा कर रहे हैं। युवाओं में योजना की सफलता से रोजगार की अधिक संभावना और बेहतर स्वास्थ्य स्तर के कारण अधिक आत्मविश्वास देखने को मिल रहा है।

इस प्रकार निर्धारित लक्ष्य का सर्वेक्षण एवं अध्ययन करने से यह तथ्य प्राप्त होता है कि शासन द्वारा संचालित महत्त्वाकांक्षी ''जल जीवन मिशन'' परियोजना के उद्देश्य ''हर घर नल– हर घर जल'' जिस ध्येय को लेकर कार्य कर रही है, उस ध्येय को झांसी जनपद के मऊरानीपुर विकास खण्ड के ग्राम सभा पुरवा का टीम सर्वे एवं अध्ययन के पश्चात् प्राप्त आंकड़े सुनिश्चित करते हैं कि सरकार द्वारा संचालित एवं पोषित परियोजना अपने लक्ष्य के अनुरूप कार्य कर रही है एवं ग्राम पुरवा की जनता इस परियोजना के अंतर्गत कृत कार्य से पूर्णतयः संतुष्ट हैं और जीवन के विभिन्न पक्षों जैसे– सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और स्वास्थ्य आदि में सकारात्मक बदलाव अनुभव कर रही है।

ग्राम पंचायत घाटकोटरा, विकास खण्ड मऊरानीपुर, जनपद झांसी

सरकार द्वारा संचालित महत्त्वाकांक्षी परियोजना ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' कार्यक्रम के अंतर्गत छठवां ग्राम घाटकोटरा का अध्ययन सहभागी मूल्यांकन

के आधार पर किया गया। इसके अंतर्गत सर्वप्रथम गांव की जनसंख्या, गांव में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, परिवारों को प्राप्त जल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्रीमती गुड़िया देवी से गांव की समग्रता के संदर्भ में बात की गयी। ग्राम प्रधान के साथ–साथ पूर्व ग्राम प्रधान और ग्राम के वर्तमान सभी वार्ड सदस्यों (05) से बात करके गांव की मूलभूत समस्याओं के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके अतिरिक्त ग्राम में संचालित कम्पोजिट विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों से बातचीत करके विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, मूलभूत सुविधाओं, जल

संयोजन की जानकारी प्राप्त की गई। विद्यालय में छात्र/छात्राओं का कुल नामांकन 440 है। गांव की जल सखी शांति देवी से भी योजना के प्रभाव के संदर्भ में चर्चा की गई। ग्राम घाटकोटरा में जल संयोजन एवं शुद्ध पेयजल की प्राप्ति समुचित मात्रा में पायी गई। घाटकोटरा ग्राम की कुल जनसंख्या लगभग 3888 और शुद्ध पेयजल प्राप्ति हेतु गृह नल संयोजन की संख्या 723 है, जिससे नियमित शुद्ध जलापूर्ति की जा रही है। इस प्रकार ग्राम घाटकोटरा के सभी परिवार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आच्छादित हैं और पर्याप्त मात्रा में शुद्ध पेयजल प्राप्त कर रहे हैं।

अध्ययन का उद्‌देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।

निदर्श निर्धारण : झांसी जनपद के विकास खण्ड मऊरानीपुर के अंतर्गत ग्राम घाटकोटरा की जनसंख्या लगभग 3888 है, जिसमें सामान्य जाति लगभग 25 प्रतिशत, अन्य पिछड़ा वर्ग की लगभग 55 प्रतिशत और अनुसूचित जाति और जनजातियों की संख्या लगभग 20 प्रतिशत है। प्रस्तुत अध्ययन में स्तरीकृत दैव निदर्शन का प्रयोग करके प्रत्येक प्रस्तर से 10 प्रतिशत लोगों का चुनाव अध्ययन हेतु घाटकोटरा ग्राम के निवासियों से किया गया। इस प्रकार सम्पूर्ण जनसंख्या से अलग–अलग जाति के अनुपात में 1/10 भाग को अध्ययन का आधार बनाया गया। 3888/10 = 388 लोगों को जिसमें स्त्री, पुरूष तथा बच्चे (जो 18 वर्ष से ऊपर के) थे, से बात करके तथा उनके जीवन स्तर पर जल जीवन मिशन के प्रभाव को देखा गया। साथ ही अध्ययन में घाटकोटरा ग्राम के प्रधान श्रीमती गुड़िया देवी, पूर्व ग्राम प्रधान अंकित राय और ग्राम पंचायत सदस्यों से योजना के प्रभाव के संदर्भ में बात की गयी। घाटकोटरा ग्राम में एक कम्पोजिट

विद्यालय संचालित है जिसके कार्यवाहक प्रधानाध्यापक धर्मवीर सिंह और विद्यालय में नामांकित कुल 440 विद्यार्थियों से भी योजना के संदर्भ में बात की गयी। घाटकोटरा ग्राम में आंगनबाड़ी केन्द्र के संचालिका सुमन वर्मा और स्वास्थ्य केन्द्र के डॉ0 रविन्द्र गुप्ता से भी योजना के प्रभाव के संबंध में बात की गई।

समाविष्ट के मानदण्ड : ग्राम घाटकोटरा विकास खण्ड मऊरानीपुर, जनपद झांसी में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम सभा की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 भाग, साथ ही ग्राम सभा के हितधारकों को अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें स्त्री, पुरूष और वृद्ध सम्मिलित थे।

बहिष्करण के मानदण्ड : प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसे व्यक्ति को सम्मिलित नहीं किया गया है जो ग्राम घाटकोटरा से सम्बद्ध और वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था।

परिणाम एवं चर्चा :

सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में : चयनित कुल 388 न्यादशों में से 194 महिलाओं से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के पूर्व एव ंपश्चात् आये बदलावों के सन्दर्भ में चर्चा करने पर 92 प्रतिशत महिलाओं बताया कि घर में जल की उपलब्धता होने से अब एक गंभीर समस्या से निजात मिला है और जीवन–शैली उन्नत हुई है। पेट संबंधी बीमारी कम हुयी है, धन की बचत हुई है। कर्ज की समस्या से बहुत हद तक छुटकारा मिला है। शुद्ध पेयजल से स्वास्थ्य में सुधार आया है। 100 प्रतिशत महिलाओं ने माना कि वह योजना और उसके क्रियान्वयन से पूर्ण रूप से संतुष्ट हैं। महिलाओं का सम्मान परिवार में बढ़ा है। अब महिलायें अपने बच्चों और

परिवार के अन्य सदस्यों की जरूरतों का ध्यान रखने में सक्षम हुई। योजना से स्वास्थ्य स्तर में सुधार होने से कार्यात्मक क्षमता भी बढ़ी है। पैसों की बचत होने के कारण बच्चों की शिक्षा

में भी सुधार देखा गया। इस प्रकार सहभागी मूल्यांकन के आधार पर यह पाया गया कि ग्राम सभा घाटकोटरा की जनता के जीवन में योजना लागू होने से सामाजिक परिवर्तन आया है। जल संकट का समाधान महिलाओं की समस्याओं का भी समाधान है क्योंकि सामान्यतः परिवार में जल संग्रह का कार्य महिलाओं को ही करना पड़ता है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने महिला सशक्तिकरण और स्वावलंबन को प्रोत्साहित किया है।

शिक्षा की स्थिति में बदलाव : घाटकोटरा ग्राम के लोगों से बात करने पर पता चला कि गांव में कम्पोजिट विद्यालय के शैक्षिक परिवेश में बहुत सुधार हुआ है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से शुद्ध पेयजल विद्यालय में नामांकन दर तो बढ़ा ही है, साथ में बच्चे नियमित रूप से

विद्यालय भी जा रहे हैं। कार्यवाहक प्रधानाध्यापक धर्मवीर सिंह ने बताया कि *''बच्चे नियमित विद्यालय आ रहे हैं और पूरे समय रूक कर पढ़ भी रहे हैं''।* सिंह ने बताया कि *''योजना से जो सुविधायें विद्यालय में मिली हैं, वह शैक्षिक परिवेश को तो सुधारा ही है, साथ में बालिकाओं के सम्मान को भी उन्नत किया है जिससे अभिभावक संकोच रहित होकर अपने बच्चों को पढ़ने के लिए नियमित भेज रहे हैं''।* शुद्ध पेयजल संकट समाप्त होने से महिलाओं के पास बचने वाले समय का उपयोग बच्चों को समय से तैयार करके नियमित विद्यालय भेजने में किया जा रहा है। बच्चों की संख्या बढ़ने से शिक्षक भी गंभीरता से पठन–पाठन का कार्य निष्पादित कर रहे

हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना सतत विकास के लक्ष्य संख्या–4 गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने की ओर उन्मुख हैं क्योंकि उक्त योजना का ध्येय केवल जल संकट समाप्त करना ही नहीं है, अपितु ग्रामीण क्षेत्र में समग्र परिवर्तन लाना भी है।

स्वास्थ्य संबंधी बदलाव : सहभागी मूल्यांकन के आधार पर अध्ययन में सम्मिलित न्यादर्शों (388) से प्राप्त मत के आधार पर पता चला कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने जल संकट

के साथ ही स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को भी समाप्त किया है। जल जलित बीमारियों से निजात मिली है। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बेहतर हुआ है। 97 प्रतिशत अध्ययन में सम्मिलित

लोगों ने बताया कि अब उन्हें बीमारी के लिए अनावश्यक रूप से डॉक्टर को पैसे देने की जरूरत नहीं है। ग्राम घाटकोटरा के निवासियों की कार्य क्षमता बढ़ी है। गांव की जल सहेली शांति देवी ने बताया कि *''गांव में नियमित शुद्ध पेयजल की आपूर्ति हो रही है जिससे गांव खुशहाली की ओर अग्रसर हुआ है और पेट संबंधी बीमारियों से मुक्ति मिली है तथा बच्चों के स्वास्थ्य में बृहद स्तर पर सुधार देखा गया है''।*

सामाजिक व्यवहार मे बदलाव : न्यादर्शों और हितधारकों से चर्चा में पता चला कि घाटकोटरा ग्राम में ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के तहत प्रत्येक घर तक पेयजल की आपूर्ति नियमित रूप से की जा रही है जबकि योजना संचालित होने के पूर्व केवल उच्च और समृद्ध लोगों तक ही शुद्ध पेयजल की पहुंच थी। ग्राम घाटकोटरा के लोगों

में गतिशीलता बढ़ी है और उनमें एकता और अपनेपन का भाव योजना लागू होने से बढ़ा है। महत्त्वाकांक्षी ''जल जीवन मिशन'' योजना से सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन आया है। अध्ययन में सम्मिलित 96 प्रतिशत लोगों ने बताया कि अनेक बार पानी को लेकर गांव में लड़ाई–झगड़े हो जाते थे, जो कि अब लगभग समाप्त हो गया है। योजना ने घाटकोटरा ग्राम में सहकार की भावना को जन्म दिया है। जीवन स्तर में सुधार होने से शादी–विवाह में भी परिवर्तन देखा गया है। बीमारियों से बचने वाले पैसों को लोग शादी–विवाह में खर्च कर रहे हैं। ग्राम घाटकोटरा एक नवीन छवि के साथ पटल पर उभरा है।

रोजगार के अवसर : ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना ने रोजगार जैसी गंभीर समस्या का समाधान भी उपलब्ध कराया है। समय बचत होने से महिलायें हस्त–शिल्प और छोटे–मोटे काम करके धनार्जन कर रही हैं। पशुपालन से दूध उत्पादन बढ़ा हैं क्योंकि लोग जल उपलब्धता होने से दुधारू पशुओं का पालन अधिक कर रहे हैं। युवा लोग गांव में ही रहकर रोजगार की ओर उन्मुख हो रहे हैं क्योंकि युवाओं के एक समूह ने बताया कि *''बाहर महानगरों में उन्हें केवल 8–10 हजार रूपये प्रतिमाह मिलते हैं और 12 घण्टों तक अस्वास्थ्यकर दशाओं में काम करना पड़ता है। अब गांव में जल संकट भी समाप्त हो गया है, इसलिए यहीं पर रहकर कोई रोजगार कर लेंगे''।* गांव मे कृषि में भी सुधार देखा गया है विशेषकर सब्जी उत्पादन में, क्योंकि महिलायें अपने बचे समय का प्रयोग सब्जी उत्पादन में भी कर रही हैं, जो उनकी आमदनी को बढ़ा रहा है। युवा लोग योजना के प्रति बहुत आशावादी हैं। घाटकोटरा ग्राम के युवाओं में भविष्य के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है।

सहभागी मूल्यांकन के आधार पर किये गये सर्वेक्षण से प्राप्त होता है कि शासन द्वारा संचालित महत्त्वाकांक्षी ''जल जीवन मिशन'' परियोजना के उद्देश्य ''हर घर नल–हर घर जल'' जिस ध्येय को लेकर कार्य कर रही है, उस ध्येय को झांसी जनपद के मऊरानीपुर विकास खण्ड के ग्राम सभा घाटकोटरा का टीम सर्वे एवं अध्ययन के पश्चात् प्राप्त आंकड़े सुनिश्चित करते हैं। ग्राम घाटकोटरा में सरकार द्वारा संचालित एवं वित्त पोषित परियोजना अपने लक्ष्य के अनुरूप कार्य कर रही है एवं ग्राम घाटकोटरा की आबादी ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के अंतर्गत कृत कार्यों से पूर्ण रूप से संतुष्ट है। ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना से पड़ने वाले बहु–आयामी प्रभाव ने गतिशीलता को जन्म देने के साथ ही गांव में सुख–समृद्धि को पोषित किया है।

ग्राम पंचायत पारीक्षा, विकास खण्ड बड़ागांव, जनपद झांसी

शासन द्वारा संचालित प्रत्येक घर तक शुद्ध पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु महत्त्वाकांक्षी परियोजना ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' कार्यक्रम के अंतर्गत सातवें ग्राम पारीक्षा विकास खण्ड बड़ागांव, जनपद झांसी का अध्ययन किया गया।

इसके अंतर्गत सर्वप्रथम गांव की जनसंख्या, गांव में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, परिवारों को प्राप्त जल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के ग्राम में स्थित अन्य सार्वजनिक भौतिक संसाधनों के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान बहादुर पाल से गांव की समग्रता के संदर्भ में बात की गई। ग्राम प्रधान के साथ–साथ

ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों (05) और बी.डी.सी. से बात करके गांव की मूलभूत समस्याओं के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके अतिरिक्त ग्राम में संचालित कम्पोजिट विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों से बातचीत करके विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, मूलभूत सुविधाओं, जल संयोजन की जानकारी प्राप्त की गई। विद्यालय में छात्र/छात्राओं का नामांकन 185 पाया गया। ग्राम पारीक्षा में जल संयोजन एवं शुद्ध पेयजल की प्राप्ति समुचित मात्रा में पायी गई। गांव में कार्यरत आंगनबाड़ी कार्यकत्री प्रेमलता गुप्ता से बात कर बच्चों तथा शिशुओं एवं माताओं के पोषाहार तथा टीकाकरण आदि की जानकारी प्राप्त की गयी। पारीक्षा ग्राम की कुल जनसंख्या 1105 है और शुद्ध पेयजल प्राप्ति हेतु गृह नल संयोजन की संख्या 190 है, जिससे नियमित शुद्ध जलापूर्ति की जा रही है। इस प्रकार ग्राम पारीक्षा के सभी परिवार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त हैं और पर्याप्त मात्रा में शुद्ध पेयजल का लाभ ले रहे हैं।

अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।

निदर्श निर्धारण : अध्ययन में सम्मिलित ग्राम पारीक्षा, विकास खण्ड बड़ागांव, जनपद झांसी की कुल आबादी 1105 है, जिसमें सभी लोग सामान्य जाति से ताल्लुक रखते हैं। अध्ययन में निदर्शन के रूप में स्तरीकृत दैव निदर्शन का प्रयोग करके प्रत्येक प्रस्तर पर 10 प्रतिशत लोगों का चुनाव ग्राम पारीक्षा से किया गया है। इस प्रकार से पारीक्षा ग्राम की कुल जनसंख्या से अनुपात में 1/10 भाग को अध्ययन का आधार बनाया गया है। 1105/10 = 110 लोगों, जिसमें पारीक्षा ग्राम की स्त्री, पुरूष तथा 18 वर्ष से ऊपर के युवाओं/युवतियों से वार्ता करके उनके जीवन

स्तर पर ''जल जीवन मिशन'' परियोजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव को देखा गया। साथ ही अध्ययन में हितधारकों के रूप में पारीक्षा ग्राम के प्रधान बहादुर पाल, ग्राम पंचायत सदस्यों, बी.डी.सी., कम्पोजिट विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्रीमती रागिनी अहिरवार (नामांकन–185), और आंगनवाड़ी कार्यकत्री श्रीमती प्रेमलता से भी ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना का पारीक्षा ग्राम पर पड़ने वाले प्रभाव के संदर्भ में वार्ता किया गया। कम्पोजिट विद्यालय के विद्यार्थियों से योजना के प्रभाव के संदर्भ में बात किया गया।

समाविष्ट के मानदण्ड : झांसी जनपद के विकास खण्ड चिरगांव के अंतर्गत ग्राम पारीक्षा में शासन द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम पारीक्षा की सम्पूर्ण जनसंख्या के 1/10 भाग को सम्मिलित किया गया, जिसमें स्त्री, पुरूष और वृद्ध सम्मिलित थे। इसके अतिरिक्त पारीक्षा ग्राम के हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया।

बहिष्करण के मानदण्ड : पारीक्षा ग्राम में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के प्रभाव मूल्यांकन में किसी–भी ऐसे उत्तरदाता (न्यादर्श) को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो ग्राम पारीक्षा, विकास खण्ड बड़ागांव, जनपद झांसी का निवासी अथवा वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था।

परिणाम एवं चर्चा :

सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में : ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के प्रभाव मूल्यांकन हेतु सहभागी मूल्यांकन के आधार पर न्यादर्श में सम्मिलित कुल 55 (50 प्रतिशत) महिलाओं के अभिमत प्राप्त किये गये और योजना से आये बदलावों के संदर्भ में चर्चा की गयी। न्यादर्श में

सम्मिलित महिलाओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' से समय, स्वास्थ्य, सम्मान और धन की बचत हुयी है। जल संकट के निवारण और शुद्ध पेयजल की उपलब्धता ने अनेक गंभीर समस्याओं का समाधान किया है। 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि वह बहुत खुश हैं कि

हमारे गांव में नियमित पेयजल की आपूर्ति हो रही है। समय बचत होने से महिलाओं की भूमिका कृषि कार्यों में बढ़ी है। अब वह बच्चों की शिक्षा पर अधिक ध्यान दे पा रही हैं। गांव की जल सखी से बात करने पर बताया कि *''जब से पेयजल की आपूर्ति नियमित रूप से हो रही है, गांव की महिलाओं का कार्य बोझ कम हुआ है और वह अन्य कार्यों जैसे– कृषि, पशुपालन और घरेलू व्यवसाय आदि पर अधिक ध्यान दे पा रही हैं''*। महिलायें अपने बच्चों की शिक्षा पर भी ध्यान दे रही हैं। महिलाओं के स्वास्थ्य स्तर में भी सुधार देखा गया है जिससे उनकी कार्यात्मक क्षमता

बढ़ी है और वह उत्पादक गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इस प्रकार महिलायें सशक्त और स्वावलंबन की तरफ योजना लागू होने के बाद से अग्रसर हुई हैं, साथ ही उनमें आत्मविश्वास की भावना प्रबल हुई है।

शिक्षा की स्थिति में बदलाव : पारीक्षा ग्राम में एक कम्पोजिट विद्यालय है जिसमें कुल नामांकन 185 है। विद्यालय की प्रधानाध्यापिका अनीसा खातून ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना लागू होने के बाद से विद्यालय में नियमित जलापूर्ति हो रही है जिससे छात्र/छात्राओं के नामांकन और उपस्थिति में बढ़ोत्तरी हुई है। खातून ने यह भी बताया कि अभिभावक भी बच्चों

की शिक्षा पर ध्यान दे रहे हैं और नियमित विद्यालय भेज रहे हैं। न्यादर्श में सम्मिलित लोगों में से 96 प्रतिशत ने यह स्वीकार किया कि बालिकाओं की शिक्षा के प्रति धारणा में सकारात्मक बदलाव आया है। पहले गांव के पास विद्यालय की अनुपलब्धता तथा कम्पोजिट विद्यालय में शौचालय आदि की व्यवस्था ना होने के कारण बेटियों को पढ़ने के लिए बाहर नहीं भेजा जाता

था, जिससे वह शिक्षा के अधिकार से वंचित हो जाती थी। चूंकि अब विद्यालय में योजना से सुविधायें बढ़ गयी हैं, बच्चियों को शौच हेतु बाहर नहीं जाना पड़ता है, इसलिए वह नियमित रूप से विद्यालय जा रही हैं। अतः स्पष्ट है कि उक्त योजना शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाकर गांव पारीक्षा में ज्ञानोदय का दीप प्रज्ज्वलित कर रही है।

स्वास्थ्य संबंधी बदलाव : ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना ने समग्र रूप से गांव पारीक्षा के स्वास्थ्य स्तर में सुधार किया है। महिला, बच्चों, युवा, वृद्ध सभी को योजना से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त हो रहा है। पेट संबंधी बीमारियों और उससे

उत्पन्न अन्य बीमारियों में कमी आयी। स्वास्थ्य पर होने वाला खर्च भी कम हुआ है। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार आया है। दूषित जल पीने से पेचिस, दस्त जैसी बीमारियों से

लोगों को निजात मिला है। आंगनबाड़ी कार्यकत्री से बात करने पर उन्होनें बताया कि बच्चों और माँ के स्वास्थ्य में शुद्ध पेयजल पीने से सुधार आया है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने सभी वर्गों के लोगों के स्वास्थ्य स्तर में उत्तरोत्तर सुधार किया है। इस प्रकार योजना बहुउद्देशीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अग्रसर है। गांव के लोगों में योजना के प्रति संतुष्टि देखी जा सकती है।

सामाजिक व्यवहार मे बदलाव : शुद्ध पेयजल लोगों का मौलिक अधिकार है, जो कि जीवन जीने के लिए आधारभूत है। लेकिन पारीक्षा गांव में केवल सम्पन्न लोगों तक ही शुद्ध पेयजल की उपलब्धता होने से निम्न स्तर के लोग इससे वंचित थे। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से सभी वर्गों को आच्छादित कर दिया गया है जिससे अब जल जलित संकट और द्वेष में कमी आयी है। गांव के लोग आपस में मिल–जुलकर रह रहे हैं। एक–दूसरे का सहयोग कर रहे हैं। पारीक्षा गांव के लागों के दृष्टिकोण में परिवर्तन देखा गया। ग्राम प्रधान ने बताया कि *''पेयजल की आपूर्ति से लोगों के जीने के अंदाज में परिवर्तन आया है और वह बुंदेलखण्ड जैसे क्षेत्र में जल संकट से बच सके हैं''।* योजना से गांव के लोगों की सोच में परिवर्तन और आधारभूत सुविधाओं की उपलब्धता से शादी–विवाह जैसी सामाजिक परम्परा में भी बदलाव आया है। 93 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि अब पूर्व की अपेक्षा पारीक्षा गांव लोग अपनी बेटियों का विवाह करना अधिक पसंद कर रहे हैं। अतः स्पष्ट है कि योजना ने पारीक्षा गांव को सामाजिक रूप से गतिशील बनाया है।

रोजगार के अवसर : ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने से जल संकट का पूर्ण समाधान हो गया है। शुद्ध जलापूर्ति ने लोगों को शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत बनाया

है। समय बचत और स्वास्थ्य स्तर में सुधार से रोजगार के विकल्पों में बढ़ोत्तरी हुई है। महिलायें कृषि और पशुपालन की ओर उन्मुख हुई हैं और उस पर अधिक समय दे रही हैं। गांव के कुछ लोग बाहर शहरों में रहकर जीवकोपार्जन कर रहे हैं, तो वहीं कुछ लोग गांव में ही रहकर स्वरोजगार और नौकरी कर रहे हैं। बीमारी पर कम खर्च होने से लोग कर्ज के जाल से बचकर स्वयं का काम धंधा शुरू करना पसंद कर रहे हैं। गांव की महिलाओं की भूमिका कृषि और पशुपालन में बढ़ने से परिवार में उनका सम्मान बढ़ा है। युवा लोगों में बेकारी का समाधान करने में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने योगदान दिया है। युवाओं में सकारात्मक दृष्टिकोण और आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ है।

''जल जीवन मिशन'' परियोजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना जिस उद्देश्य को संबोधित होकर कार्य कर रही है, उसकी प्राप्ति प्रस्तुत शोध कार्य के अंतर्गत सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त आंकड़े सुनिश्चित करते हैं। सरकार द्वारा संचालित एवं पोषित परियोजना के अंतर्गत कृत कार्य पारीक्षा गांव, वि0ख0 बड़ागांव की खुशहाली और समद्धि को उन्नत कर रही है। गांव की जनता की संतुष्टि योजना की महत्ता और प्रभाविता को सुस्पष्ट करती है। ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना पारीक्षा गांव में बहुआयामी परिवर्तन लाकर लोगों के रहन–सहन के स्तर में सुधार और जीवन को एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया है।

ग्राम पंचायत तिलैथा, विकास खण्ड बड़ागांव, जनपद झांसी

परियोजना ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' कार्यक्रम के अंतर्गत आठवें ग्राम तिलैथा का अध्ययन किया गया। इसके अंतर्गत सर्वप्रथम गांव की जनसंख्या,

गांव में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, परिवारों को प्राप्त जल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान गोविंद सिंह यादव से गांव की समग्रता के संदर्भ में बात की गयी। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों (9) से बात करके गांव की मूलभूत समस्याओं के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके अतिरिक्त ग्राम तिलैथा कलां में संचालित दो विद्यालयों, एक प्राथमिक

विद्यालय एवं एक पूर्व माध्यमिक विद्यालय और तिलैथा खुर्द में संचालित एक प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों से बातचीत कर विद्यालय में मूलभूत सुविधाओं, जल संयोजन की जानकारी प्राप्त की गई। विद्यालय में जल संयोजन एवं शुद्ध जल की नियमित प्राप्ति हो रही है। ग्राम तिलैथा में जल संयोजन एवं शुद्ध पेयजल की प्राप्ति समुचित मात्रा में पायी गई। गांव में कार्यरत आंगनबाड़ी कार्यकत्री से बात कर बच्चों तथा शिशुओं एवं माताओं के पोषाहार तथा टीकाकरण आदि की जानकारी प्राप्त की गयी। तिलैथा ग्राम की कुल जनसंख्या 2228 और शुद्ध पेयजल प्राप्ति हेतु गृह नल संयोजन की संख्या 390 है, जिससे नियमित शुद्ध जलापूर्ति की जा रही है। इस प्रकार ग्राम तिलैथा के सभी परिवार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आच्छादित हैं और पर्याप्त मात्रा में शुद्ध पेयजल प्राप्त कर रहे हैं।

अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।

निदर्श निर्धारण : जनपद झांसी के विकास खण्ड बड़ागांव के अंतर्गत ग्राम तिलैथा की कुल जनसंख्या लगभग 2228 है। तिलैथा ग्राम में बहुसंख्यक आबादी सामान्य जाति (लगभग 79 प्रतिशत) एवं शेष 21 प्रतिशत आबादी अनुसूचित जाति की है। प्रस्तुत अध्ययन में स्तरीकृत दैव निदर्शन का प्रयोग करते हुए प्रत्येक प्रस्तर से 10 प्रतिशत लोगों का चुनाव अध्ययन हेतु ग्राम तिलैथा के निवासियों से किया गया। इस प्रकार सम्पूर्ण जनसंख्या से अलग–अलग जाति के अनुपात में 1/10 भाग को अध्ययन का आधार बनाया गया। 2228/10 = 222 लोगों को जिसमें स्त्री, पुरूष तथा बच्चे (जो 18 वर्ष से ऊपर के) थे, से बात करके तथा उनके जीवन स्तर पर ''जल जीवन मिशन'' के प्रभाव को देखा गया। इसके साथ ही अध्ययन में हितधारकों

के रूप में ग्राम तिलैथा के ग्राम प्रधान गोविंद सिंह यादव और दस पंचायत सदस्यों से योजना के संदर्भ में चर्चा की गयी। ग्राम तिलैथा कलां में स्थापित प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक नन्दलाल वर्मा और प्राथमिक विद्यालय तिलैथा खुर्द के प्रधानाध्यापक अभिषेक यादव एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालय तिलैथा कलां की प्रधानाध्यापिका श्रीमती चन्दू प्रभा पटेरिया को भी अध्ययन में सम्मिलित करके 'जल जीवन मिशन'' योजना का तिलैथा ग्राम पर पड़ने वाले प्रभाव की चर्चा की गयी। इन विद्यालयों में नामांकित विद्यार्थियों से भी बात की गयी। तिलैथा ग्राम में संचालित आंगनबाड़ी केन्द्र की कार्यकत्री सत्यवती और शांती को भी हितधारक के रूप में अध्ययन में सम्मिलित किया गया।

समाविष्ट के मानदण्ड : ग्राम तिलैथा विकास खण्ड बड़ागांव, जनपद झांसी में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम सभा की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 भाग साथ ही ग्राम सभा के हितधारकों को अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें स्त्री, पुरूष और वृद्ध सम्मिलित थे।

बहिष्करण के मानदण्ड : प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसे व्यक्ति को सम्मिलित नहीं किया गया है जो ग्राम सभा पुरवा से सम्बद्ध और वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था।

परिणाम एवं चर्चा :

सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में : न्यादर्श के रूप में सम्मिलित कुल 222 लोगों में महिलाओं की संख्या 111 है। महत्त्वाकांक्षी योजना ''जल जीवन मिशन'' लागू होने के पूर्व और पश्चात् आये बदलावों के संदर्भ में महिलाओं से बात करने पर यह तथ्य प्रकाश में आया कि 99 प्रतिशत

महिलायें सहमत हैं कि उनके जीवन में योजना लागू होने के बाद सकारात्मक बदलाव आये हैं और पूर्व की अपेक्षा उनके ऊपर कार्य बोझ कम हुआ है, जिसके कारण वह अन्य उत्पादक कार्यों में अधिक समय दे पा रही हैं। 100 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि पहले वह शौच हेतु बाहर

जाती थी, जो उनकी शर्मिंदगी और बीमारी का कारण बनता था, अब वह पर्याप्त और नियमित शुद्ध पेयजल तक पहुँच होने कारण शौचालय में भी पानी की व्यवस्था कर ली हैं और उसका नियमित उपयोग करती हैं। अब उन्हें बाहर जाकर शर्मिंदगी महसूस करने की जरूरत नहीं है। महिलाओं ने बताया कि शुद्ध पेयजल के कारण अब बीमारियों में भी कमी आयी है जिसके कारण स्वास्थ्य पर होने वाले अनावश्यक खर्च में कमी आयी है जिसका उपयोग वह बच्चों की पढ़ाई–लिखाई व अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में कर रही हैं। जल संग्रह पर खर्च होने वाले समय में

कमी आने से महिलायें बहुत खुश हैं। वह गुणात्मक समय परिवार के लिए निकाल पा रही हैं। शुद्ध पेयजल से पेट संबंधी बीमारियों की कमी के कारण महिलाओं के स्वास्थ्य स्तर में भी कमी आयी है और वह अधिक ऊर्जावान होकर अपने कार्यों को संपादित कर रही हैं। सहभागी मूल्यांकन के आधार पर पाया गया कि कुल मिलाकर इस योजना ने महिलाओं की प्रस्थिति, ग्रामीण खुशहाली और पारिवारिक तनाव में कमी को प्रोत्साहित किया है।

शिक्षा की स्थिति में बदलाव : ग्राम तिलैथा कलां और तिलैथा खुर्द में स्थापित प्राथमिक विद्यालयों में और पूर्व माध्यमिक विद्यालय तिलैथा कलां को ''जल जीवन मिशन'' से आच्छादित किया गया है जिसके कारण वहां पर विद्यार्थियों के लिए शुद्ध पेयजल सुनिश्चित हो सका है और उक्त विद्यालयों में नामांकन दर पूर्व की अपेक्षा बढ़ा है। साथ ही योजना लागू होने से विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति की दर विद्यालय में बढ़ी है। पहले दूषित जल पीने से बच्चों में पेट संबंधी बीमारियां अधिक होती थी, जो कि अब न्यूनतम हो गयी है जिससे बच्चों के स्वास्थ्य स्तर में सुधार देखा गया है। जल की उपलब्धता ना होने से विद्यालय में बने शौचालय कार्यात्मक नहीं थे जिसके कारण अभिभावक अपनी बच्चियों को विद्यालय भेजने में कतराते थे, लेकिन अब जल की उपलब्धता से शौचालय कार्यात्मक रूप में आ गये हैं और साफ–सफाई भी नियमित होती है जिसके परिणाम स्वरूप बच्चियों की नामांकन दर और उपस्थिति में बहुत सुधार आया है। इस प्रकार से तिलैथा ग्राम में शैक्षिक परिवेश विद्यार्थियों के अनुकूल होने से पूर्व की अपेक्षा शैक्षिक स्तर में सुधार आया है।

स्वास्थ्य संबंधी बदलाव : ग्राम तिलैथा के हितधारकों और अध्ययन में न्यादर्श रूप में सम्मिलित कुल 222 लोगों से सहभागी मूल्यांकन के आधार पर 97 प्रतिशत लोगों ने बताया कि ''हर घर

नल–हर घर जल'' योजना के परिणामस्वरूप स्वास्थ्य स्तर में पूर्व की अपेक्षा सुधार आया है। पहले पेट दर्द और लूज मोशन संबंधी बीमारी अधिक होती थी, जो कि योजना लागू होने के बाद से बहुत कम हो गयी है। 95 प्रतिशत लोगों ने बताया कि अब बीमारियों पर खर्च होने वाला पैसा बच रहा है जिसका उपयोग वह बच्चों की पढ़ाई–लिखाई तथा कृषि कार्यों पर कर रहे हैं। ग्राम प्रधान ने बताया कि यदि जलापूर्ति में कोई समस्या आती है तो उससे संबंधित को सूचित कर तत्काल ठीक करवाया जाता है, ताकि शासन की मंशा के अनुसार शुद्ध पेयजल सभी को नियमित प्राप्त होता रहे। न्यादर्श के रूप में सम्मिलि लोगों ने बताया कि पहले जल संकट के कारण शारीरिक स्वच्छता भी नियमित नहीं हो पाती थी जिसके कारण चर्म रोग अधिक होते थे, लेकिन जब से योजना का संचालन हो रहा है, जल संकट समाप्त हो गया है और शारीरिक स्वच्छता के लिए पर्याप्त जल उपलब्ध हो रहा है, जिससे चर्म रोगों से मुक्ति मिल गयी है।

सामाजिक व्यवहार मे बदलाव : तिलैथा ग्राम में सहभागी मूल्यांकन के आधार पर पता चला कि पहले जल की उपलब्धता गांव के समृद्ध लोगों तक ही थी, लेकिन जब से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से सभी परिवारों का आच्छादित किया गया है, शुद्ध पेयजल की उपलब्धता सभी परिवारों तक सुनिश्चित हुई है। जलाभाव के कारण होने वाले झगड़ों में कमी आयी है। इस प्रकार गांव में शांति और सामंजस्यपूर्ण माहौल बना है। लोगों के समग्र दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है। 100 प्रतिशत लोगों ने बताया कि अब शादी–विवाह के अवसर पर टैंकर से पानी मंगाने की जरूरत नहीं पड़ती है। जल संकट समाप्त होने से लोग अपनी लड़कियों का विवाह

तिलैथा ग्राम में करना पसंद कर रहे हैं। इस प्रकार से विकास खण्ड बड़गांव के अंतर्गत ग्राम तिलैथा में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना समग्र रूप से सकारात्मक बदलाव लायी है।

रोजगार के अवसर : योजना लागू होने से 97 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि अब वह पशुपालन की तरफ आकर्षित हो रहे हैं क्योंकि पहले शुद्ध जल की कमी के कारण पशुपालन नहीं कर पा रहे थे। कृषि कार्य में महिलायें अब अधिक समय दे पा रही हैं क्योंकि पहले जल संचयन पर लगने वाला उनका समय बच रहा है। 100 प्रतिशत लोगों ने बताया कि बीमारी कम होने से वह अपने रोजगार को नियमित रूप से कर पा रहे हैं। ग्राम रोजगार सेवक ने बताया कि पहले बीमारी के कारण लोग मनरेगा में नियमित काम नहीं कर पाते थे, लेकिन योजना लागू होने के बाद बीमारी कम होने से गांव के लोग नियमित काम पर आते हैं और उनके कार्य प्रदर्शन में सुधार हुआ है। ग्राम तिलैथा के कुछ लोग बाहर महानगरों में रहकर नौकरी कर रहे हैं और कुछ लोग गांव और आस–पास के कस्बों में रोजगार में लगे हैं। जल संकट समाप्त होने से और शुद्ध जल की आपूर्ति से पलायन की दर कम हुई है क्योंकि युवा लोग अब गांव में रहना पसंद कर रहे हैं। युवाओं के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है। उनमें आत्मविश्वास बढ़ा है। न्यादर्श में सम्मिलित युवाओं से बात करने पर पता चला कि वह अब गांव में ही रहकर रोजगार करना चाहते हैं क्योंकि गांव की सबसे बड़ी समस्या अब समाप्त हो चुकी है। इस प्रकार से यह सिद्ध होता है कि ग्राम तिलैथा में योजना लागू होने के बाद से रोजगार के क्षेत्र में व्यापक बदलाव आया है और युवा लोग आत्मश्विास से भरे हैं ।

अतः स्पष्ट होता है कि ''जल जीवन मिशन'' परियोजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना जिस उद्‌देश्य के साथ कार्य कर रही है, उस लक्ष्य की पूर्ति ग्राम तिलैथा,

विकास खण्ड बड़ागांव, जनपद झांसी में हो रही है। सरकार द्वारा संचालित और वित्तीय रूप से पोषित योजना ''जल जीवन मिशन'' परियोजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' द्वारा कृत कार्य के प्रति ग्राम तिलैथा के लोगों में पूर्ण संतुष्टि को भाव है। लोगों की आधारभूत जरूरतों में से एक शुद्ध पेयजल की समुचित उपलब्धता से बहुत बड़ी समस्या समाप्त हो गयी है। ग्राम तिलैथा की जनता विकास के सभी क्षेत्रों में सकारात्मक बदलाव महसूस कर रही है।

ग्राम गैरहा, विकास खण्ड बंगरा, जनपद झांसी

शासन की महत्त्वाकांक्षी परियोजना ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' कार्यक्रम के अंतर्गत नवें ग्राम गैरहा का अध्ययन सहभागी मूल्यांकन के आधार पर किया गया। इसके अंतर्गत सर्वप्रथम गांव की जनसंख्या, गांव में परिवारों की संख्या, जातीय

समीकरण, परिवारों को प्राप्त जल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्रीमती अशमा सिंह परिहार से गांव की समग्रता के संदर्भ में बात करके जानकारी प्राप्त की गयी। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के

सभी वार्ड सदस्यों (09) से बात करके गांव की मूलभूत समस्याओं के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। साथ ही ग्राम के प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, मूलभूत सुविधाओं, जल संयोजन की जानकारी प्राप्त की गई। प्राथमिक विद्यालय में छात्र/छात्राओं का नामांकन–76 है। गांव के इण्टर कॉलेज के प्रधानाचार्य से भी बात करके योजना के पश्चात् आये बदलावों के संदर्भ में चर्चा किया गया। प्राथमिक विद्यालय में जल संयोजन एवं शुद्ध पेयजल की प्राप्ति समुचित मात्रा में पायी गई। ग्राम में संचालित आंगनबाड़ी की कार्यकत्री श्रीमती उर्मिला देवी और स्वास्थ्य केन्द्र के डॉक्टर डॉ0 प्रतिमा पुरैया से भी ''जल जीवन मिशन'' के प्रभाव के आलोक में चर्चा की गई। अध्ययन में योजना से संतृप्त परिवारों को समग्र के रूप में सम्मिलित किया गया है। गैरहा ग्राम में स्वच्छ जल प्राप्ति हेतु गृह नल संयोजन की संख्या–165 है जिसके कारण ग्राम के प्रत्येक परिवार को शुद्ध पेयजल की आपूर्ति की जा रही है और हर परिवार को पर्याप्त मात्रा में शुद्ध जल प्राप्त हो रहा है।

निदर्श निर्धारण : झांसी जनपद के विकास खंड बंगरा में अवस्थित ग्राम गैरहा की जनसंख्या लगभग 1191 है, जिसमें बहुसंख्यक आबादी 984 सामान्य वर्ग की एवं 207 अनुसूचित जाति एवं जनजाति की है। शोध में स्तरीकृत दैव निदर्शन का प्रयोग करते हुए प्रत्येक प्रस्तर से 10 प्रतिशत लोगों का चुनाव अध्ययन के लिए किया गया है। इस प्रकार संपूर्ण जनसंख्या के अलग–अलग जाति के अनुपात का 1/10 को अध्ययन का आधार बनाया गया। इस प्रकार 1191/10 = 119 लोगों, जिसमें स्त्री, पुरुष तथा बच्चे, जो 18 वर्ष से ऊपर के थे, उनसे बात करके तथा उनके जीवन स्तर पर योजना का प्रभाव देखा गया। इसके अतिरिक्त ग्राम गैरहा के हितधारकों

जिसमें ग्राम प्रधान श्रीमती अशमा सिंह परिहार एवं ग्राम पंचायत के 9 सदस्यों और पूर्व ग्राम प्रधान श्री सुखराम कुशवाहा से योजना के संदर्भ में बात की गई। ग्राम सभा गैरहा के एक प्राथमिक विद्यालय जिसकी प्रधानाध्यापिका श्रीमती निर्मला हैं, से एवं विद्यालय में छात्र/छात्राओं से ''हर घर नल हर घर जल योजना'' के संदर्भ में बात की गई। साथ ही इण्टर कॉलेज के प्रधानाचार्य से भी चर्चा की गई। ग्राम सभा गैरहा की आंगनवाड़ी कार्यकत्री को भी न्यादर्श में सम्मिलित किया गया एवं स्वास्थ्य केन्द्र के डॉक्टर डॉ0 प्रतिमा पुरैया को भी उत्तरादाता के रूप में सम्मिलित किया गया।

समाविष्ट के मानदंड : ग्राम सभा गैरहा, विकास खंड बंगरा, जनपद झांसी में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम सभा के संपूर्ण जनसंख्या का 1/10 और हितधारकों को अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें वयस्क स्त्री, पुरुष तथा वृद्ध सम्मिलित थे।

बहिष्कार के मानदंड : किसी भी ऐसे व्यक्ति को जो ग्राम सभा गैरहा से संबद्ध नहीं था या जो वर्णित योजना का पात्र या लाभार्थी नहीं था, उसे अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया गया है।

परिणाम एवं चर्चा

सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में : ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के प्रभाव को जानने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित कुल 119 लोगों में से 60 महिलाओं को सम्मिलित किया गया। महिलाओं से योजना के प्रभाव के संदर्भ में चर्चा करने पता चला कि योजना से उनके सम्मान को सुरक्षा मिली है। ग्राम प्रधान श्रीमती अशमा सिंह परिहार से बात करने पर बताया कि

''योजना से गांव की महिलाओं का कार्य बोझ कम हुआ है। पर्याप्त जलापूर्ति होने से गांव को खुले में शौच मुक्त करने में मदद मिली है। अब महिलाओं और लड़कियों की इज्जत पर पर्दा लग गया क्योंकि अब उन्हें खुले में शौच से मुक्ति मिल गई है।'' 100 महिलाओं ने बताया कि अब उन्हें बीमारी से भी मुक्ति मिल गई है जिससे वह अधिक कार्य कर पा रही हैं। गांव की एक महिला ने बताया कि *खुले में शौच करने जाते समय सांप काटने से मेरी बेटी की मृत्यु हो गयी थी, अब घर में ही बने शौचालय में परिवार के सभी सदस्य जाते हैं।* ''हर घर नल हर घर जल योजना'' ने महिलाओं के समय में बचत की है और साथ ही बीमारी से मुक्ति मिलने से

धन की भी बचत हुई है। पर्याप्त जलापूर्ति होने से जल संकट समाप्त हो गया है जिससे

महिलायें बचे समय का उपयोग उत्पादक कार्यों में कर रही हैं। बच्चों की शिक्षा पर भी महिलायें अब समय दे पा रही हैं और परिवार की देख–भाल भी कर रही हैं। महिलाओं की जल जनित मानसिक समस्यायें समाप्त हुई हैं। इस प्रकार से ''हर घर नल–हर घर जल'' ने महिलाओं को सशक्त व स्वावलंबी बनाया है और लैंगिक भेद–भाव को कम करके सतत विकास लक्ष्य–5 को प्राप्त करने की ओर कदम बढ़ाया है।

शिक्षा की स्थिति में बदलाव : इण्टर कॉलेज के प्रधानाचार्य श्री धीरेन्द्र कुमार साहू ने बताया कि *'''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने ग्राम गैरहा में साक्षरता और शिक्षा को बढ़ावा देने में योगदान दिया है। अब बच्चे नियमित स्नान करके विद्यालय आ रहे हैं जो कि पहले नहीं आते थे''।* सहभागी मूल्यांकन में पाया गया कि गैरहा ग्राम के अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दे रहे हैं क्योंकि अब उनके पास पर्याप्त समय है। गांव का प्राथमिक विद्यालय योजना से पूर्णतः संतृप्त है, जिससे शुद्ध पेयजल की आपूर्ति बच्चों के लिए हो रही है। जल उपलब्धता से शौचालय भी कार्यात्मक हो गये हैं जिससे बच्चों का नामांकन विद्यालय में बढ़ा है। विद्यालय के शिक्षक भी नियमित कक्षाओं का संचालन कर रहे हैं। प्राथमिक विद्यालय के एक शिक्षक ने बताया कि *''योजना के पश्चात् बच्चों के शैक्षिक प्रदर्शन में सुधार हुआ है''*। योजना से आये बदलाव के कारण महिलायें नियमित रूप से स्कूल अपने बच्चों को तैयार करके समय से भेज रही हैं। अतएव कहा जा सकता है कि ग्राम गैरहा में शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक बदलाव आये हैं।

स्वास्थ्य संबंधी बदलाव : संपूर्ण न्यादर्श 119 और हितधारकों से चर्चा करने एवं अवलोकन करने तथा सहभागी मूल्यांकन से प्राप्त तथ्यों से ज्ञात हुआ कि 96 प्रतिशत लोगों ने यह माना कि इस योजना के लागू होने से उनके स्वास्थ्य संबंधी स्थितियों में बदलाव आया है। पेट से संबंधित

बीमारियों में कमी आई है। पेचिस, दस्त, पीलिया जैसी बीमारियों में कमी हुई है। पाचन क्रिया ठीक हुई है। स्वास्थ्य खर्च में कमी आई है। बचे पैसे का उपयोग बच्चों की पढ़ाई–लिखाई पर किया जा रहा है। महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार आने से पारिवारिक सुख में वृद्धि हुई है। बच्चों में बीमारियां कम होने से शारीरिक और मानसिक सुदृढ़ता बढ़ी है। ग्राम गैरहा के लोगों में योजना के प्रति संतुष्टि का भाव परिलक्षित हो रहा है। वह स्वयं को खुश किस्मत समझते हैं कि उनका गांव शुद्ध पेयजल की आपूर्ति से आच्छादित है।

सामाजिक व्यवहार में बदलाव : पहले केवल अमीर लोगों तक ही स्वच्छ जल की पहुंच थी जो कि योजना लागू होने के बाद से सभी वर्गों/जातियों के लोगों को शुद्ध पेयजल से संतृप्त कर दिया गया है। जल को लेकर होने वाले झगड़ों में कमी आयी है। गांव में खुशहाली का माहौल बना है। भेद–भाव समाप्त और लोगों का व्यवहार परिवर्तन हुआ है। लोगों के मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है। सहभागी मूल्यांकन के आधार पर पता चला कि 80 प्रतिशत लोग मानते हैं कि लोगों के रहन–सहन में परिवर्तन आने से शादी–विवाह जैसी परम्पराओं में भी परिवर्तन आया है। लोग सामाजिक समारोहों में अधिक खर्च कर रहे हैं क्योंकि उनकी आय और खर्च में कमी आयी है। कुल मिलाकर ग्राम गैरहा में सामाजिक परिवर्तन को योजना लागू होने के बाद से प्रोत्साहन मिला है। अब गांव के लोग खुशहाल व समृद्ध जीवन जी रहे हैं।

रोजगार के अवसर : ग्राम गैरहा का मुख्य व्यवसाय कृषि है। अधिकांश जनसंख्या कृषि आय पर निर्भर है। योजना लागू होने के बाद से जल संग्रह करने में महिलाओं का समय बच रहा है जिसका उपयोग वह कृषि और पशुपालन तथा सिलाई–कढ़ाई जैसे कार्यों में कर रही हैं। युवाओं में पलायन कम हुआ है क्योंकि जल संकट के निवारण और शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य में बढ़ोत्तरी होने से वह गांव में ही रहकर रोजगार करना पसंद कर रहे हैं। युवाओं में गांव के प्रति अपनापन बढ़ा है जिससे वह गांव में ही स्वरोजगार की ओर उन्मुख हो रहे हैं। रोजगार सेवक से प्राप्त जानकारी के अनुसार *मनरेगा में काम की मांग बढ़ी है।* इस प्रकार से यह स्पष्ट होता है कि "हर घर नल–हर घर जल" योजना ने बहु–आयामी परिवर्तन को प्रोत्साहित करके लोगों के जीवन को सुखमय बनाया है।

स्पष्ट है कि निर्धारित लक्ष्य का सहभागी मूल्यांकन के आधार पर अध्ययन करने से यह ज्ञात हुआ कि राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन द्वारा संचालित परियोजना ''जल जीवन मिशन'' का उद्देश्य ''हर घर नल–हर घर जल'' जिस उद्देश्य को लेकर संचालित हो रही है, वह उद्देश्य ग्राम गैरहा, विकास खंड चिरगांव, जनपद झांसी का टीम सर्वे एवं अध्ययन के पश्चात प्राप्त आंकड़े यह सुनिश्चित करते हैं कि सरकार द्वारा संचालित एवं पोषित परियोजना अपने लक्ष्य के अनुरूप कार्य किया है। योजना ने लोगों के जीवन के विविध पक्षों को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है एवं ग्राम गैरहा में बहु–आयामी परिवर्तन को गतिशील किया है। गांव की जनता योजना से आये सामाजिक–आर्थिक बदलावों के प्रति संतुष्ट है।

ग्राम पंचायत चिरकना, विकास खण्ड बंगरा, जनपद झांसी

सम्पूर्ण आबादी को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सरकार द्वारा संचालित परियोजना ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' कार्यक्रम के प्रभाव का

अध्ययन दसवें ग्राम चिरकना में किया गया। इसके अंतर्गत सर्वप्रथम गांव की जनसंख्या, गांव में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, परिवारों को प्राप्त जल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्रीमती सुनीता देवी से गांव की समग्रता के संदर्भ में बात की गई। ग्राम प्रधान के साथ–साथ

ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों (06) से बात करके गांव की मूलभूत समस्याओं के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके अतिरिक्त ग्राम में संचालित कम्पोजिट विद्यालय के प्रधानाध्यापक विमला लिखदारी एवं शिक्षकों से बातचीत करके विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, मूलभूत सुविधाओं, जल संयोजन की जानकारी प्राप्त की गई। विद्यालय में कुल नामांकन संख्या–106 है। ग्राम चिरकना में जल संयोजन एवं शुद्ध पेयजल की प्राप्ति समुचित मात्रा में पायी गई। गांव में कार्यरत आंगनबाड़ी कार्यकत्री श्रीमती मत्री देवी से बात कर बच्चों तथा शिशुओं एवं माताओं के पोषाहार तथा टीकाकरण आदि की जानकारी प्राप्त की गयी। ग्राम चिरकना में कोई स्वास्थ्य केन्द्र संचालित नहीं है। चिरकना ग्राम की कुल जनसंख्या 758 और शुद्ध पेयजल प्राप्ति हेतु गृह नल संयोजन की संख्या 281 है, जिससे नियमित शुद्ध जलापूर्ति की जा रही है। इस प्रकार ग्राम चिरकना के सभी परिवार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आच्छादित हैं और पर्याप्त मात्रा में शुद्ध पेयजल प्राप्त कर रहे हैं।

अध्ययन का उद्‌देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।

निदर्श निर्धारण : सहभागी मूल्यांकन में सम्मिलित ग्राम चिरकना, विकास खण्ड बंगरा, जनपद झांसी की कुल आबादी 758 है, जिसमें सामान्य जाति की जनसंख्या 295 और अनुसूचित जाति की जनसंख्या 463 है। अध्ययन में निदर्शन के रूप में स्तरीकृत दैव निदर्शन का प्रयोग करके प्रत्येक प्रस्तर पर 10 प्रतिशत लोगों का चुनाव ग्राम चिरकना से किया गया है। इस प्रकार से चिरकना ग्राम की कुल जनसंख्या से अगल–अलग अनुपात में 1/10 भाग को अध्ययन का आधार बनाया गया है। 758/10 = 75 लोगों, जिसमें चिरकना ग्राम की स्त्री, पुरूष तथा 18

वर्ष से ऊपर के युवाओं से वार्ता करके उनके जीवन स्तर पर ''जल जीवन मिशन'' परियोजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव को देखा गया। साथ ही अध्ययन में हितधारकों के रूप में चिरकना ग्राम की प्रधान सुनीता देवी, ग्राम पंचायत सदस्यों, कम्पोजिट विद्यालय के प्रधानाध्यापिका श्रीमती विमला लिखदारी (नामांकन–106), एवं सहायक अध्यापकों एवं आंगनवाड़ी कार्यकत्री श्रीमती मत्री देवी से भी ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना का चिरकना ग्राम पर पड़ने वाले प्रभाव के संदर्भ में वार्ता किया गया।

समाविष्ट के मानदण्ड : झांसी जनपद के विकास खण्ड बंगरा के अंतर्गत ग्राम चिरकना में शासन द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम चिरकना की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 भाग को सम्मिलित किया गया। इसके अतिरिक्त चिरकना ग्राम के हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें स्त्री, पुरूष और वृद्ध सम्मिलित थे।

बहिष्करण के मानदण्ड : प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसे व्यक्ति को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो ग्राम चिरकना, विकास खण्ड बंगरा, जनपद झांसी से सम्बद्ध और वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था।

परिणाम एवं चर्चा :

सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में : प्रस्तुत अध्ययन में ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना का सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्रभाव का जानने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित कुल 75 न्यादर्शों में से अध्ययन में सम्मिलित 38 महिलाओं से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना

लागू होने के पश्चात् आने वाले परिवर्तन के संदर्भ में चर्चा करने पर पता चला कि महिलााओं के जीवन में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से बहु–आयामी परिवर्तन आया है। 95 प्रतिशत महिलायें सहमत है कि उन्हें योजना लागू होने के बाद से बीमारियों से निजात मिली है।

योजनांतर्गत नियमित शुद्ध जल की आपूर्ति होने से समय की बचत हो रही है, धन की बचत हो रही है, श्रम की बचत हुई है जिससे वह व्यवसायोन्मुख कार्यों में संलग्न हो रही हैं। महिलायें बच्चों की शिक्षा पर अधिक समय दे पा रही हैं। महिलाओं द्वारा परिवार को अधिक समय देने से पारिवारिक खुशहाली में वृद्धि हुई है। पेट संबंधी बीमारियों से महिलाओं को मुक्ति मिली है।

अब उन्हें परिवार में सम्मानित स्थान प्राप्त हुआ है। योजना के सफलापूर्वक क्रियान्वयन से महिलाओं के आत्म–विश्वास में वृद्धि हुयी है। श्रम और धन की बचत का उपयोग उत्पादनात्मक और विकासात्मक कार्यों में किया जा रहा है। योजना द्वारा लैंगिक समानता के साथ ही सतत विकास लक्ष्य संख्या 4, 5 और 6 को प्राप्त करने में भी सहायता मिल रही है।

शिक्षा की स्थिति में बदलाव : ग्राम चिरकना, विकास खण्ड बंगरा में स्थित कम्पोजिट विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है। कुछ बच्चे दूसरे गांव में स्थित प्राइवेट विद्यालयों में भी पढ़ने जाते हैं। योजना द्वारा चिरकना ग्राम की शिक्षा में व्यापक स्तर पर बदलाव आया है। माता–पिता द्वारा बच्चों की शिक्षा पर पहले की अपेक्षा अधिक ध्यान दिया जा रहा है। बच्चों के

स्वास्थ्य स्तर में सुधार आने से वह नियमित विद्यालय जाकर पढ़ाई कर रहे हैं। विद्यालय को योजना से संतृप्त करने कारण बच्चों का आकर्षण विद्यालय की ओर बढ़ा है और नामांकन दर में वृद्धि हुई है क्योंकि अब विद्यालय मूलभूत सुविधाओं से संतृप्त हो चुका है। विद्यालय की प्रधानाध्यपिका ने बताया कि पूर्व वर्ष की अपेक्षा वर्तमान सत्र में नामांकन दर और बच्चों की नियमित उपस्थिति में वृद्धि हुई है और अभिभावक समय से बच्चों को विद्यालय भेज रहे हैं। इस प्रकार शिक्षित ग्राम से शिक्षित राष्ट्र की संकल्पना फलित हो रही है।

स्वास्थ्य संबंधी बदलाव : सहभागी मूल्यांकन के आधार पर ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना

के बहु–आयामी प्रभाव के रूप में चिरकना ग्राम के लोगों का स्वास्थ्य स्तर उन्नत हुआ है। गांव के लोगों को बीमारियों से मुक्ति मिली है। उनका शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य उन्नत हुआ

है। पीलिया, डायरिया, पेचिस और पेट से संबंधित अन्य बीमारियां बहुत कम हो गई हैं। लोगों की कार्यात्मक क्षमता में वृद्धि हुई जिससे वह अन्य कार्यों का निष्पादन प्रभावी ढ़ंग से कर पा रहे हैं। गांव में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से 'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है' जैसी संकल्पना को साकार करने में मदद मिली है।

सामाजिक व्यवहार मे बदलाव : ''हर घर नल–हर घर जल'' चिरकना ग्राम पूर्ण रूप से आच्छादित है। पूर्व में शुद्ध पेयजल तक पहुंच केवल साधन संपन्न लोगों तक थी, जो कि अब सभी लोगों तक हो चुकी है। जल संकट से होने वाले संघर्षों में कमी आयी है। सामाजिक गतिशीलता बढ़ी है। जल संकट के समाधान से भेद–भाव में कमी आयी है। गांव में सहकारिता का विकास हुआ है। जीवन स्तर में बदलाव आने से शादी–विवाह जैसे मूल्यों में बदलाव आया है। ग्राम प्रधान के अनुसार– ''हर घर नल–हर घर जल'' ने लोगों की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करके जल संकट से उत्पन्न संघर्षों को कम किया है। इस प्रकार उक्त योजना से ग्रामीण खुशहाली एवं संतुष्टि तथा शांति में वृद्धि हुई है।

रोजगार के अवसर : ग्राम चिरकना के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं सम्बद्ध गतिविधियां हैं। कुछ लोग जीवकोपार्जन हेतु बाहर शहरों में गये हुये हैं और कुछ लोग गांव में ही रहकर स्वरोजगार करके जीवन–यापन कर रहे हैं। महिलायें घरेलू व्यवसाय में हाथ बटा रही हैं और कुछ कृषि और पशुपालन जैसे कार्यों में संलग्न हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' से रोजगार के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन को संबोधित किया है। महिलाओं के पास अधिक समय बच रहा है जिसका उपयोग वह उत्पादक कार्यों में कर रही हैं। स्वास्थ्य में सुधार होने से श्रम बल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है और उनके कार्य प्रदर्शन में सुधार देखा गया। ''हर घर नल–हर

घर जल'' ने देश के वर्तमान एवं भविष्य कहे जाने वाले युवाओं को पलायन जैसी समस्या से बचाकर गांव से जोड़ने में महती भूमिका निभायी है जिससे परिवार रूपी सामाजिक संस्था में मजबूती आयी है। युवाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है। ''हर घर नल—हर घर जल'' से युवा लोग गांव में रहकर डेयरी, कृषि, पशुपालन, कुक्कुट पालन आदि रोजगारोन्मुख कार्यों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। अतएव यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल—हर घर जल'' ने रोजगार के क्षेत्र में आमूल—चूल परिवर्तन लाकर सामाजिक परिवर्तन को गतिशील किया है।

''जल जीवन मिशन'' योजनांतर्गत ''हर घर नल—हर घर जल'' परियोजना जिस ध्येय को संबोधित होकर कार्य कर रही है, उसकी प्राप्ति, प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त आंकड़े सुनिश्चित करते हैं। सरकार द्वारा संचालित एवं पोषित परियोजना के अंतर्गत कृत कार्य चिरकना गांव में व्यापक स्तर पर बदलाव को इंगित किया है। लोगों में योजना के प्रति संतुष्टि का भाव है। ''हर घर नल—हर घर जल'' से बहु—आयामी परिवर्तन हुआ जिससे विकास के विभिन्न आयामों में सुधार देखा जा सकता है।